सामुदायिक GOONJ

National News Magazine

वर्ष : 01 अंक : 10 | अगस्त 2023 | मूल्य: ₹ 50 | पृष्ठ : 52

जुलाई 2023 का अंक

ग्वालियर, अगस्त 2023
(वर्ष 01, अंक 10, , पृष्ठ 52, मूल्य 50 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सलाहकार संपादक
राजीव तोमर, भूपेन्द्र तोमर

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

कानूनी सलाहकार
एड. अरविन्द दूदावत

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह

छायांकन/सिटी रिर्पोटर
अनिल सिंह सिकरवार

न्यूज एंकर
प्रिया शिन्दे, कल्पना पाल

संकलन
अभय बघेल, स्निग्ध तोमर

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

ग्वालियर के फेफड़े जन अभियान से प्रेरित होकर कृति सिंह की सुपुत्री करिशनी ने अपने जन्मदिन के अवसर पर सिंधिया पार्क सिटी सेंटर पर कटहल का पौध रोपण कर प्रकृति संरक्षण का अपना दायित्व पूर्ण किया। जन अभियान जनता का अभियान इसमें सभी लोग बढ़चढ़ कर सहभागिता करें

Inside Story

04

44

06

45

43

46

23

48

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक कृति सिंह के लिए गूंज ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई 69-70 हरिशंकर पुरम ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित । संपादक-कृति सिंह RNI.No-MPBIL/2022/84878

मेरी माटी-मेरा देश अभियान

सार्थक पहल में करें सहभागिता

देश की आजादी के 77 वें स्वतंत्रता दिवस आज़ादी के अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों से तिरंगा फहराने और तिरंगा यात्रा निकालने का आह्वान किया था। देश में जगह-जगह तिरंगा यात्रा निकाली गयी। भवनों के ऊपर तिरंगा ध्वज फहराया गया। सभी जगह उत्साह का माहौल रहा।

एक बड़े उत्सव को दुनिया ने देखा।

देश का हिंदू ही नहीं मुस्लिम समाज भी तिरंगा यात्रा में बढ़-चढ़ कर भाग लेते दिखा। वहीं दूसरी ओर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सार्थक पहल मेरी माटी, मेरा देश अभियान का आह्वान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के दौरान किया था। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस को मनाने के लिए एक अनोखे विचार का हवाला दिया था। उन्होंने अमृत महोत्सव समारोह के दौरान मेरी माटी- मेरा देश अभियान की घोषणा की थी, पीएम मोदी ने मेरी माटी-मेरा देश अभियान का सुझाव देते हुए कहा था कि इसकी टैगलाइन मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन है। अभियान राष्ट्रव्यापी अभियान राष्ट्र और बहादुरों की उपलब्धियों को जश्न मनाने को लेकर है। इस वर्ष यह अभियान गांव, पंचायत, ब्लॉक, शहरी स्थानीय निकाय, राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करके जनभागीदारी को बढ़ावा देने के लिए है। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात एपिसोड 103 में कहा था, इसके तहत हमारे अमर शहीदों की याद में देशभर में कई कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे। इन विभूतियों की स्मृति में देश की लाखों ग्राम पंचायतों में विशेष शिलालेख भी लगाए जाएंगे। इस अभियान के तहत देशभर में अमृत कलश यात्रा भी आयोजित की जाएगी। उन्होंने आगे कहा था कि देश के कोने-कोने से 7500 कलशों में मिट्टी लेकर अमृत कलश यात्रा देश की राजधानी दिल्ली पहुंचेगी। यह यात्रा अपने साथ देश के विभिन्न हिस्सों से पौधे भी लेकर आएगी। 7500 कलशों में आने वाली मिट्टी और पौधों को मिलाकर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के पास अमृत वाटिका बनाई जाएगी। ये अमृत वाटिका एक भारत-श्रेष्ठ भारत का भी भव्य प्रतीक बनेगी कुल मिलाकर मेरी माटी मेरा देश अभियान भारत की स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ मनाने का एक अनूठा और नया तरीका है। सभी लोग अपने मूल स्थानों या ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की मिट्टी संस्कृति मंत्रालय को भेजकर राष्ट्रव्यापी अभियान में भाग ले सकते हैं।

15 अगस्त पर आजादी का पर्व मनाते समय हम बलिदान को याद करते हैं। देश पर शहीद हुए क्रांतिकारियों का स्मरण करते हैं। उन्हें सजदा करते हैं। सिर झुकाते हैं। श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। उनकी दीवानगी की बदौलत, कुरबानी की बदौलत, इस आजादी की लड़ाई के प्रतिफल में हमें आजादी तो मिली। पर एक बहुत बड़ा घाव दे गई। बंटवारे का घाव, देश के सीने पर एक ऐसी लकीर खींच गई, जिसे बार-बार महसूस किया जा सकता है। मिटाया नहीं जा सकता।

कृति सिंह
संपादक

> “ **प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सार्थक पहल मेरी माटी, मेरा देश अभियान का आह्वान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात के के दौरान किया था। उन्होंने स्वतंत्रता दिवस को मनाने के लिए एक अनोखे विचार का हवाला दिया था। उन्होंने अमृत महोत्सव समारोह के दौरान मेरी माटी- मेरा देश अभियान की घोषणा की थी, पीएम मोदी ने मेरी माटी-मेरा देश अभियान का सुझाव देते हुए कहा था कि इसकी टैगलाइन मिट्टी को नमन, वीरों का वंदन है।**

● गूंज न्यूज नेटवर्क

9 अगस्त से मेरी माटी मेरा देश अभियान शुरू हुआ जो 30 अगस्त तक चलेगा. इस अभियान की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम के दौरान की थी. 30 जुलाई को प्रसारित हुए मन की बात कार्यक्रम के 103वें प्रसारण में पीएम मोदी ने कहा था कि इस अभियान के दौरान वीरों को याद करने के लिए देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा. ये अभियान 9 अगस्त से 30 अगस्त के बीच चलाया जाएगा. बता दें कि इस साल 15 अगस्त को देश की आजादी के 77 साल पूरे हो जाएंगे. इस बार स्वतंत्रता दिवस के मौके पर मेरी माटी मेरा देश कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है. पिछले साल केंद्र सरकार ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर हर घर तिरंगा अभियान चलाया था. जिसमें देशभर में हर घर की छत पर तिरंगा नजर आया था. वहीं इस साल देशवासी मेरी माटी मेरा देश अभियान के साथ आजादी का महोत्सव मनाएंगे.

क्या है मेरी माटी मेरा देश अभियान

पीएम मोदी ने अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात के 103वें संस्करण के दौरान मेरी माटी मेरा देश अभियान के बारे में जानकारी दी थी. इस अभियान का उद्देश्य भारत के वीर सपूतों को आजादी के मौके पर याद करना है. इस दौरान देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाएगा. उनकी स्मृति में अमृत सरोवरों के निकट ग्राम पंचायतों में शिलाफलकम स्थापित किए जाएंगे. प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में कहा था कि अमृत महोत्सव की गूंज और 15 अगस्त करीब आने के बीच, देश में एक और महान अभियान शुरू होने जा रहा है. उन्होंने कहा था कि हमारे वीर पुरुषों और महिलाओं के सम्मान में मेरी माटी मेरा देश अभियान शुरू किया जाएगा.

कब तक चलेगा मेरी माटी मेरा देश अभियान

बता दें कि मेरी माटी मेरा देश अभियान 9 अगस्त को शुरू हो रहा है. जिसके तहत 15 अगस्त, 2023 यानी स्वतंत्रता दिवस तक निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजिन किया जाएगा. इसके बाद इस कार्यक्रम को 16 अगस्त से ब्लॉक, नगर पालिका/निगम और राज्य स्तर पर आयोजित कराया जाएगा. इस कार्यक्रम का समापन समारोह कर्तव्य पथ, नई दिल्ली 30 अगस्त को किया जाएगा. जिसमें कई गणमान्य व्यक्ति शामिल होंगे.

क्या है इस अभियान का उद्देश्य?

मेरी माटी मेरा देश अभियान का उद्देश्य उन बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों और वीरों का सम्मान करना है, जिन्होंने देश के लिए अपना जीवन बलिदान किया. सूचना एवं प्रसारण और दूरसंचार विभाग के सचिव अपूर्व चंद्रा के मुताबिक, 'मेरी माटी मेरा देश' आजादी का अमृत महोत्सव का समापन कार्यक्रम होगा, जिसके तहत भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने का उत्सव मनाया जा रहा है. अपूर्व चंद्रा के मुताबिक, पिछले साल आयोजित राष्ट्रव्यापी अभियान, हर घर तिरंगा बेहद सफल रहा था और इस साल आजादी का अमृत महोत्सव के तहत एक और महत्वाकांक्षी कार्यक्रम मेरी माटी मेरा देश की शुरूआत हो रही है.

इस है मेरी माटी मेरा देश अभियान में खास

बता दें कि इस अभियान के दौरान देशभर में अमृत कलश यात्रा का आयोजन किया जाएगा. यह अमृत कलश यात्रा देश के हर कोने 7,500 कलशों में मिट्टी लेकर देश की राजधानी दिल्ली पहुंचेगी. यह यात्रा अपने साथ देश के विभिन्न हिस्सों से पौधे भी लेकर दिल्ली आएगी. इन 7,500 कलशों में आने वाली मिट्टी और पौधों को मिलाकर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के पास 'अमृत वाटिका' बनाई जाएगी. यह 'अमृत वाटिका' 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का भव्य प्रतीक बनेगी. सूचना एवं प्रसारण और दूरसंचार विभाग के सचिव अपूर्व चंद्रा के मुताबिक, वीरों को श्रद्धांजलि के रूप में शिलाफलकम स्थापित किया जाएगा. मिट्टी का नमन और वीरों का वंदन; मेरी माटी मेरा देश अभियान के प्रमुख घटक हैं.

गूंज ने हर्षोल्लास, धूमधाम से मनाई स्वाधीनता की 77 वीं वर्षगाँठ

आजादी के अमृत महोत्सव को यादगार बनाने मेरी माटी-मेरा देश अभियान के प्रति देशवासियों को किया जागरूक

● गूंज न्यूज नेटवर्क

आजादी के अमृत महोत्सव को यादगार बनाने के लिए देशभर में मेरी माटी-मेरा देश नाम से अभियान 9 से 30 अगस्त के बीच चलाया जा रहा है। इसी अभियान के अन्तर्गत गूँज 90.8 एफ. एम. द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर विशेष 'मेरी माटी मेरा देश' थीम के अन्तर्गत स्वतंत्रता दिवस मनाया गया और रेडिया एफ. एम. के माध्यम से देशवासियों को इस अभियान के बारे में विस्तार से जानकारी भी दी गई।

गूंज मीडिया हाउस में 77 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगर निगम ग्वालियर के डिप्टी कमिश्नर शिशिर श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया और सभी को शुभकामनाएं दीं। गूंज टीम द्वारा गूंज कार्यालय में झंडा वंदन किया गया। इस अवसर पर गूंज की पूरी टीम उपस्थित रही। गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह ने सभी को स्वतंत्रता दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम में देशभक्ति के गीतों के साथ पूरे जोश जज्बे के साथ हमारा राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर गूँज की डायरेक्टर कृति सिंह ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव को यादगार बनाने के लिए अब देशभर में मेरी माटी-मेरा देश नाम से एक नया अभियान 9 से 30 अगस्त के बीच चलाया जा रहा है। इस अभियान की घोषणा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने मन की बात कार्यक्रम के दौरान की थी. 30 जुलाई को प्रसारित हुए मन की बात कार्यक्रम के 103वें प्रसारण में पीएम मोदी ने कहा था कि इस अभियान के दौरान वीरों को याद करने के लिए देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होगा. ये अभियान 9 अगस्त से 30 अगस्त के बीच चलाया जाएगा. इस दौरान प्रत्येक ग्राम पंचायतों में वीर सेनानियों की याद में एक स्मारक का निर्माण होगा। इस शिला में क्षेत्र के सभी वीर सेनानियों के नाम दर्ज किए जाएंगे। इसके साथ ही इस अभियान के तहत प्रत्येक गांव की मिट्टी को एक नमूने के तौर पर जुटाकर अमृत कलश यात्रा के रूप में दिल्ली लाया जाएगा। इस दौरान प्रत्येक गांवों में अपने गांव की मिट्टी को हाथ में लेकर एक शपथ भी दिलाई जाएगी, जो सामूहिक कार्यक्रमों में शामिल होकर या फिर अपने घरों में रहकर भी लिया जा सकता है।

गूंज मीडिया हाउस में 77 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगर निगम ग्वालियर के डिप्टी कमिश्नर शिशिर श्रीवास्तव ने ध्वजारोहण किया और सभी को शुभकामनाएं दीं। गूंज टीम द्वारा गूंज कार्यालय में झंडा वंदन किया गया। इस अवसर पर गूंज की पूरी टीम उपस्थित रही।

मेरी माटी, मेरा देश अभियान में सभी देशवासी सहभागी बनें

परिवहन मुख्यालय में मनाया गया स्वतंत्रता दिवस परिवहन आयुक्त संजय झा ने किया ध्वजारोहण

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

मध्यप्रदेश के ग्वालियर स्थित परिवहन मुख्यालय में हुआ जिसमें स्टॉफ के 100 से भी अधिक लोगों ने उपस्थिति दी। परिवहन आयुक्त संजय झा ने इस अवसर पर आज के स्वतंत्रता दिवस की महत्ता पर

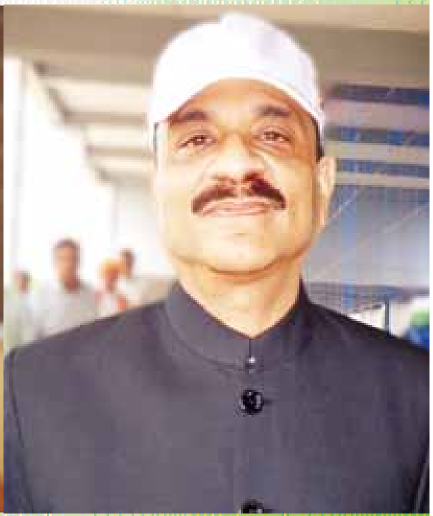

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर परिवहन आयुक्त संजय झा ने स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण किया। इसके बाद गार्ड ऑफ ऑनर का आयोजन हुआ और सभी अधिकारी गण ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। इस मौके पर परिवहन आयुक्त संजय झा व अपर आयुक्त अरविंद सक्सैना ने परिसर में पौधरोपण भी किया। ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान का आयोजन

प्रकाश डाला। इस अवसर पर अपर आयुक्त अरविंद सक्सैना एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा। कार्यक्रम के अंत में सभी को मिष्ठान वितरण किया गया।

अंतरिक्ष की दुनिया में भारत की छलाँग

चंद्रयान-3 की चांद पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग कर भारत ने इतिहास तो रच दिया है। इसरो को, इस मिशन में लगी पूरी टीम को ही नहीं देश की पूरी वैज्ञानिक बिरादरी को इसके लिए जितनी बधाई दी जाए कम है। यह वास्तव में देश की उस वैज्ञानिक चेतना और सूक्ष्म दृष्टि का कमाल है, जो तमाम बाधाओं के बावजूद पिछले 61 साल से हमारा अंतरिक्ष कार्यक्रम आगे बढ़ता रहा है। हमने पहले चांद पर पानी खोजा और अब चांद के दूसरे सिरे पर भी पहुंच गए। निश्चित रूप से यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि है और अंतरिक्ष अनुसंधान के अगले चरण में इसका फायदा पूरी दुनिया को मिलेगा। असाधारण दबावों और चुनौतियों का सामना करते हुए इसरो ने चंद्रयान-3 के विक्रम लैंडर को चंद्रमा की 70 डिग्री दक्षिणी अक्षांश रेखा के पास बिल्कुल सटीक तरीके से उतार कर भारत ने विलक्षण इतिहास तो रचा ही है, दुनिया में भारत विरोधी शक्तियों का मुंह भी बंद कर दिया है, अब भारत गरीबी भी दूर कर रहा है, अपनी समस्याओं के समाधान खुद के बल पर हल भी कर रहा है और दुनिया की बड़ी से बड़ी शक्ति से टक्कर लेने की स्थिति में भी पहुंच रहा है। आजादी के अमृतकाल में ऐसी ही अनेक उपलब्धियों की स्पष्ट आहट सुनाई दे रही है। इस विलक्षण, अनूठी एवं चमत्कारपूर्ण सफलता के लिये इसरो को, इस मिशन में लगी पूरी टीम को ही नहीं देश की पूरी वैज्ञानिक बिरादरी को जितनी बधाई दी जाए कम है लेकिन इन उत्सव एवं उमंग के क्षणों में भी राजनीति करने वालों पर तरस आता है, भगवान् उन्हें सद्बुद्धि दें। निश्चित ही भारत ने चांद को मुट्ठी में कर लिया है और यह जता दिया है कि कम साधनों एवं खर्चों में भी भारत बड़ी लकीरें खींच सकता है।

निश्चित ही भारत ने वह कर दिखाया, जो विश्व का कोई देश और यहां तक कि अमेरिका, चीन एवं रूस भी नहीं कर सका। इसरो यानी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने चंद्रयान-3 के लैंडर को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक पहुंचाकर देश ही नहीं, दुनिया को चमत्कृत करने का काम किया। चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर सफल लैंडिंग एक ऐसा अविस्मरणीय और अद्भुत क्षण है, जो वर्षों तक भारतवासियों को प्रेरित करता रहेगा। यह

GOONJ SPECIAL STORY

> **असाधारण दबावों और चुनौतियों का सामना करते हुए इसरो ने चंद्रयान-3 के विक्रम लैंडर को चंद्रमा की 70 डिग्री दक्षिणी अक्षांश रेखा के पास बिल्कुल सटीक तरीके से उतार दिया है। अंतरिक्ष विज्ञान के प्रायोगिक इतिहास में इस तरह की उपलब्धि पहली बार हासिल की गई है। पृथ्वी के दूसरी तरफ पड़ने वाली चंद्रमा की अदृश्य सतह पर लंबे समय तक अपना रोवर यूटू-2 चलाने का गौरव चीन ने भी हासिल किया है, लेकिन इस काम के लिए उसने चंद्रमा की भूमध्यरेखा का नजदीकी इलाका ही चुना था। लेकिन खनिजों की दृष्टि से समृद्ध समझा जाने वाला चंद्रमा का दक्षिणी ध्रुवीय इलाका इतना ऊबड़-खाबड़ है, और पृथ्वी से पल-पल का संवाद बनाए रखना वहां इतना कठिन है कि वैज्ञानिक इसे अजेंडा पर ही लाने से बचते रहे हैं। इसरो के लिए एक और दबाव ऐन मौके पर पेश हो गया था।**

एक अमिट आलेख है, शानदार उपलब्धि है, जो सचमुच स्वर्णाक्षरों में लिखी जाएगी। इस उपलब्धि ने हम भारत के लोगों में जिस उत्साह और उमंग का संचार किया है, वह अकल्पनीय है। इन चमत्कृत करने वाले दृश्यों को भारत के करोड़ों लोगों ने देखा एवं समूचे देश को उत्सवमय बना दिया। अंतरिक्ष में नये भारत की इस नई, असाधारण एवं ऐतिहासिक उड़ान से समूची दुनिया को लाभ मिलेगा। जाहिर है, ये प्रयोग सिर्फ भारत के लिए नहीं, पूरी दुनिया के लिए मायने रखते हैं। अब इस चन्द्रयान से मिलने वाली सूचनाओं से चन्द्रमा पर मानव जीवन की संभावनाओं को पंख लग सके तो कोई आश्चर्य नहीं है। वहां पर जल की उपलब्धता, तापमान, जमीन की स्थिति, उपलब्ध खनिज पदार्थों आदि की जानकारियां एवं टेक्टॉनिक हलचलों का पता चलेगा।

बहरहाल, इसरो का काम कितना पक्का, तीक्ष्ण एवं परिपक्व था, इसका अंदाजा लगाने के लिए चंद्रयान-3 की उतराई का लाइव ग्राफ देखना देश-दुनिया के लिए काफी रहा होगा। यह हर बिंदु पर ठीक वैसा ही रहा, जैसा इसके होने की उम्मीद थी। साइंस-टेक्नॉलजी के मामले में रूस की गति भारत से एक सदी आगे समझी जाती है। इसके बावजूद लूना-25 को पार्किंग ऑर्बिट से लैंडिंग ऑर्बिट में लाने वाले थ्रस्टर्स ने ऑटोमेटिक कमांड समझने में चूक कर दी और वह अस्थिर कक्षा में पहुंचकर नष्ट हो गया। लेकिन चंद्रयान-3 के एक-एक थ्रस्टर ने कमांड के मुताबिक काम किया। यकीनन इसमें बहुत बड़ी भूमिका चंद्रयान-2 से हासिल किए गए तजुर्बे की रही।

चंद्रयान-3 अभियान की सफलता पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह ठीक ही कहा कि यह विकसित एवं नये भारत का जयघोष है और इससे देश को एक नई ऊर्जा और चेतना मिली है। उन्होंने चंद्रयान-3 की सफलता को जिस तरह नए भारत की नई उड़ान करार देते हुए इसे अमृतकाल की प्रथम प्रभा में अमृत वर्षा की संज्ञा दी, उससे इस यकीन को बल मिलता है कि वर्ष 2047 तक भारत विकसित राष्ट्र बनने के अपने सपने को वास्तव में साकार करने की दिशा में बढ़ रहा है। यह वास्तव में देश की उस वैज्ञानिक चेतना और सूक्ष्म दृष्टि का कमाल है, जो तमाम बाधाओं के बावजूद पिछले 61 साल पूर्व साइकिल से शुरू हुए हमारे अंतरिक्ष कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहा है। हमने पहले चांद पर पानी खोजा और अब चांद के दूसरे सिरे पर भी पहुंच गए। इसरो ने जो इतिहास रचा, वह यही रेखांकित कर रहा है कि नए भारत का निर्माण हो रहा है और वह महाशक्ति बनने की राह पर अग्रसर है। अब यह भरोसे के साथ कहा जा सकता है कि विश्व पटल पर अपनी और गहरी छाप छोड़ने का भारत का समय आ चुका है। इसके साथ ही यही वक्त है जब इसरो को अपनी महत्वाकांक्षाओं को फिर से नापने की, उन्हें विस्तार देने और सरकार को इस काम में उसकी हर संभव मदद करने की जरूरत है। ताजा उपलब्धि से इसरो की राह में अवसरों की लाइन लगनी तय है।

दुनिया ने माना भारत का लोहा

GOONJ **SPECIAL STORY**

इसरो के विज्ञानियों और तकनीकी विशेषज्ञों ने अपने लगन, जिजीविषा, तप, त्याग और संकल्प से बेहद कठिन माने जाने वाले कार्य को जिस कुशलता से संपन्न किया, उससे उन्होंने दुनिया में अपनी मेधा का लोहा मनवाया। वे वंदन और अभिनंदन के पात्र हैं। अब यह तय है कि पहले से ही भारत को एक उभरती शक्ति के रूप में देख रहा विश्व समुदाय भारत को और अधिक महत्व देगा। इसरो ने सफलता की जो गाथा लिखी, उससे हमारी अन्य संस्थाओं को भी प्रेरणा लेनी चाहिए और उन्हें भी अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट बनने का संकल्प लेना चाहिए। इससे ही भारत को विकसित देश बनाने में आसानी होगी। इस ऐतिहासिक घटना से भारत के राजनीतिज्ञों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि वे स्वार्थों एवं संकीर्णताओं को त्याग कर देश को बनाने के लिये प्रतिबद्ध बने। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले इस देश की सरकार एक तरफ लोगों की आम जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रही है तो दूसरी तरफ कोरोना जैसे महासंकट में दुनिया के लिये सहयोगी बनी। वह आतंकवाद मुक्त दुनिया की संरचना करने में जुटी है तो न्यायपूर्ण विश्व-संरचना के उसके उद्घोष दुनिया को भा रहे हैं। खुद के देश में गरीबी का कलंक धोने की उसकी कोशिशें सफलता की सीढ़िया चढ़ रही है। देश में आतंकवाद एवं साम्प्रदायिक हिंसा को कम करने में भी सफलता मिली है। महिलाओं को सुरक्षा का भरोसा हो रहा है, तो बेरोजगारी पर भी काबू पाने के जतन किये जा रहे हैं। वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति मजबूत करना मोदी के अभियान के प्रमुख संदेशों में से एक है। आर्थिक, कूटनीतिक और तकनीकी क्षेत्र में विकास ने नये भारत के संकल्प को बल दिया है।

निश्चित ही चन्द्रयान-3 की सफलता का श्रेय इसरो एवं उसके वैज्ञानिकों को दिया जायेगा, लेकिन प्रधानमंत्री ने अपनी दूरगामी सोच एवं प्रोत्साहन से उनका हौसला बढ़ाया है। 2014 में मंगल मिशन के दौरान, 2019 में चंद्रयान-2 की लैंडिंग के वक्त मोदी खुद इसरो के मिशन कंट्रोल रूम में मौजूद थे, लेकिन चंद्रयान-3 की लैंडिंग के वक्त वे ब्रिक्स के सम्मेलन के लिए जोहानिसबर्ग में थे। उन्होंने वहीं से अपनी शुभकामनाएं दीं एवं भारत पहुंचने के बाद साक्षात् मिलकर ऐसा करने का बोला है। अब इन सकारात्मक स्थितियों में राजनीति करने की बजाय हमें चंद्रयान-3 की सफलता को लेकर

कुछ-न-कुछ संकल्प लेने चाहिए कि अलग-अलग समुदायों के बीच भेदभाव मिटता हुआ दिखाई दे।

हम अक्सर इस बात पर गर्व करते रहे हैं कि हमारे वैज्ञानिक कितने कम खर्च में शानदार काम कर रहे हैं। इस बार भी बताया जा रहा है कि चंद्रयान-3 को चांद पर पहुंचाने की लागत हॉलिवुड की हाल में रिलीज हुई फिल्मों- ओपनहाइमर और बार्बी- से कितनी कम है। लेकिन यह नहीं सोचते कि आखिर कम से कम खर्च में काम चलाने की मजबूरी हमारे वैज्ञानिकों की संभावना को कितना प्रभावित करती होगी। 2023-24 में स्पेस एक्टिविटीज के लिए आवंटित बजट 12,544 करोड़ रुपये है, जो पिछले साल यानी 2022-23 के मुकाबले 8 फीसदी कम है। ध्यान रहे, इसरो की कमाई का मुख्य जरिया इसके सैटलाइट लॉन्चर्स हैं। जुलाई 2023 तक इसरो ने 36 देशों के 431 सैटलाइट लॉन्च किए हैं। जुलाई 2022 तक विदेशी सैटलाइट की लॉन्चिंग से इसरो को कुल 22.3 करोड़ डॉलर की कमाई हुई है। वह भी तब, जब भारत रॉकेट लॉन्च करने की क्षमता से लैस टॉप 10 देशों में शामिल है। आज की तारीख में ग्लोबल स्पेस इकॉनमी में भारत की हिस्सेदारी महज 2 फीसदी है। सरकार का लक्ष्य है कि दशक के अंत तक मार्केट के 9 फीसदी हिस्से पर कब्जा हो जाए। इस संदर्भ में एक कंसल्टिंग फर्म आर्थर डी लिट्ल का यह आकलन गौर करने लायक है कि मौजूदा रफ्तार से 2040 तक भारत की स्पेस इकॉनमी 40 अरब डॉलर की होगी। लेकिन संभावनाओं की बात की जाए तो भारत में 2040 तक 100 अरब डॉलर की स्पेस इकॉनमी बनने की क्षमता है। जाहिर है, यही वक्त है जब इसरो को अपनी महत्वाकांक्षाओं को फिर से नापने की और सरकार को इस काम में उसकी हर संभव मदद करने की जरूरत है। ताजा उपलब्धि से इसरो की राह में अवसरों की लाइन लगनी तय है, अहम सवाल यह है कि क्या इसरो और भारत उन अवसरों का सही इस्तेमाल करने की स्थिति में होगा?

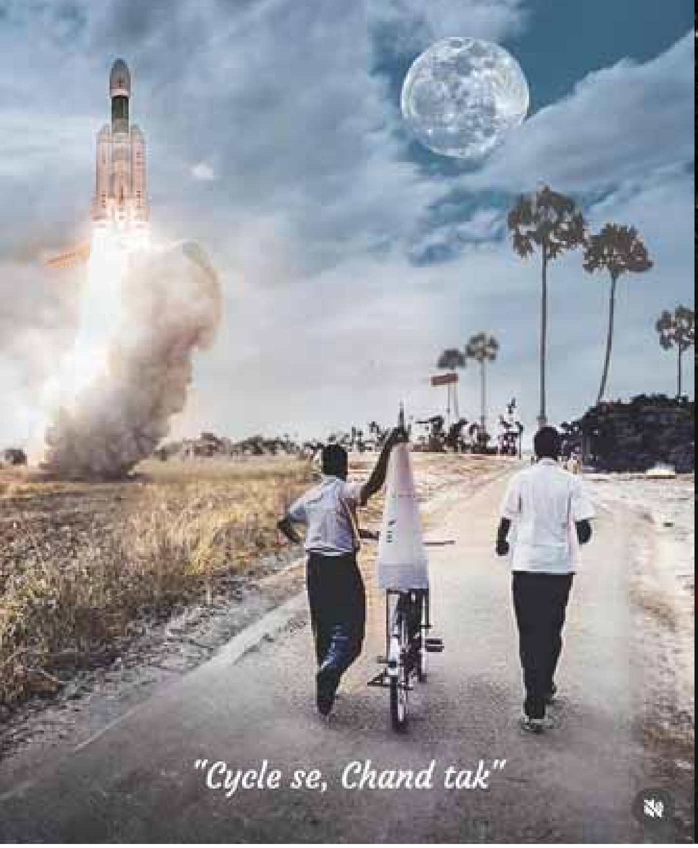

साइकिल से चांद तक का सफर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों की साइकिल पर रॉकेट के पुर्जे ले जाते हुए एक तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो गई है क्योंकि चंद्रयान-3 ने चंद्रमा की सतह के दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्र के पास सफल लैंडिंग की है। छवि में दो इसरो वैज्ञानिकों को तिरुवनंतपुरम में थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन पर एक नाक शंकु ले जाते हुए दिखाया गया है भारत के चंद्रयान-3 मिशन की सफलता से हर भारतीय प्रसन्न है। सभी के मन में यह जानने की इच्छा है कि इस समय चंद्रमा पर हमारा चंद्रयान क्या कर रहा है साथ ही सभी यह भी जानना चाहते हैं कि इस मिशन को कामयाब बनाने वाले वैज्ञानिकों या इसरो के अन्य वैज्ञानिकों को आखिर कितनी तनख्वाह मिलती होगी? इस सवाल का जवाब भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व प्रमुख जी माधवन नायर ने दिया है जिसे सुनकर निश्चित ही आप सभी चौंक जाएंगे। चौंकना स्वाभाविक भी है क्योंकि जब छोटी से छोटी उपलब्धि हासिल करने पर लोग बड़े से बड़ा पारिश्रमिक या ईनाम चाहते हैं तो वहीं दूसरी ओर हमारे वैज्ञानिकों को धन की कोई चाह ही नहीं होती। वैज्ञानिक इतने साधारण तरीके से रहते हैं कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते। एक ओर जहां हॉलीवुड फिल्मों का बजट 1000 करोड़ रुपए और बॉलीवुड फिल्मों का बजट 500-600 करोड़ रुपए से ज्यादा का होने लगा है तो वहीं हमारे वैज्ञानिकों ने मात्र 615 करोड़ रुपए में चंद्रयान को चांद पर पहुँचा दिया है। जहां तक भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी के वैज्ञानिकों की पगार की बात है तो आपको बता दें कि यह विकासित देशों के वैज्ञानिकों के वेतन का पांचवां हिस्सा है और शायद यही कारण है कि वे अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए किफायती तरीके तलाश सके। इसरो के पूर्व प्रमुख जी माधवन नायर ने कहा है कि अन्य देशों की तुलना में बेहद कम कीमत वाले साधनों के जरिए अंतरिक्ष में खोज का भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी का इतिहास है। उन्होंने कहा

कि इसरो में वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और अन्य कर्मियों को जो वेतन भत्ते मिलते हैं वे दुनिया भर में इस वर्ग के लोगों को मिलने वाले वेतन भत्तों का पांचवां हिस्सा है। उन्होंने कहा कि इसका एक लाभ भी है। उन्होंने कहा कि इसरो के वैज्ञानिकों में कोई भी लखपति नहीं है और वे बेहद सामान्य जीवन जीते हैं। नायर ने कहा, %%हकीकत यह है कि वे धन की कोई परवाह भी नहीं करते, उनमें अपने मिशन को लेकर जुनून और प्रतिबद्धता होती है। इस तरह हम ऊंचा मुकाम हासिल करते हैं।'' उन्होंने कहा कि इसरो के वैज्ञानिक बेहतरीन योजना बना कर और दीर्घ कालिक दृष्टिकोण के जरिए ये उपलब्धि हासिल कर सके। इसरो के पूर्व प्रमुख जी माधवन नायर के अनुसार, हम एक-एक कदम से सीखते हैं। जो हमने अतीत में सीखा है, हम अगले मिशन में उसका इस्तेमाल करते हैं। हमने करीब 30 वर्ष पहले ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान के लिए जो इंजन बनाया था उसी का इस्तेमाल भूस्थैतिक उपग्रह प्रक्षेपण यान में भी किया जाता है।'' उन्होंने कहा कि भारत अपने अंतरिक्ष अभियानों के लिए घरेलू तकनीक का उपयोग करता है और इससे उन्हें लागत को काफी कम करने में मदद मिली है। भारत के अंतरिक्ष मिशन की लागत अन्य देशों के अंतरिक्ष अभियानों की तुलना में 50 से 60 प्रतिशत कम है। जी माधवन नायर ने कहा कि हमने अच्छी शुरुआत की है और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। पूर्व इसरो प्रमुख माधवन नायर ने कहा कि देश के पास पहले से ही यूरोप और अमेरिका के साथ कई वाणिज्यिक अनुबंध हैं और अब चंद्रयान-3 की सफलता के साथ ये बढ़ेंगे। दूसरी ओर, इसरो के वर्तमान प्रमुख एस. सोमनाथ की बात करें तो वह भी बेहद सरल और सहज हैं। एक छोटी-सी उपलब्धि पर भी कोई अधिकारी या व्यक्ति जहां अहंकार प्रदर्शित करने लगता है वहीं सरल स्वभाव के धनी सोमनाथ इस सफलता का श्रेय इसरो नेतृत्व और वैज्ञानिकों की पीढ़ियों की मेहनत को दे रहे हैं। चंद्रयान-3 की सफलता के बाद इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने कहा कि चंद्रयान-3 की सफलता इसरो नेतृत्व और वैज्ञानिकों की पीढ़ियों की मेहनत का नतीजा है। उन्होंने कहा कि यह सफलता 'बहुत बड़ी' और 'प्रोत्साहित करने वाली' है।

GOONJ BRICK SUMIT

ब्रिक्स समिट: छह देशों को संगठन का न्योता, मोदी बोले-इनसे हमारे ऐतिहासिक रिश्ते

साउथ अफ्रीका में 15वीं ब्रिक्स समिट के आखिरी दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग हाथ मिलाते नजर आए। दोनों नेताओं के बीच कुछ सेकेंड की बातचीत भी हुई। इससे पहले नवंबर 2022 में पीएम मोदी और जिनपिंग ने इंडोनेशिया में हुई जी20 समिट में सीमा विवाद पर बात की थी, जिसकी जानकारी इस साल दी गई। दूसरी तरफ, ब्रिक्स संगठन में जुड़ने के लिए 6 नए देशों को न्योता दिया गया है। इनमें अर्जेंटीना, सऊदी अरब,यूएई, मिस्र, इथियोपिया और ईरान शामिल हैं। ये 1 जनवरी 2024 से ब्रिक्स के परमानेंट मेंबर बन जाएंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्रीस के पीएम किरियाकोस मित्सोटाकिस के साथ द्विपक्षीय वार्ता करने के बाद प्रेस को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि ग्रीस और भारत दुनिया की दो पुरातन सभ्यताओं, दो पुरातन लोकतांत्रिक विचारधाराओं और दो पुरातन व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों के बीच एक स्वाभाविक मेल है। हमारे रिश्ते की बुनियाद प्राचीन और मजबूत है। पीएम मोदी ने कहा कि आज कृषि क्षेत्र में सहयोग के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए गए हैं। रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में, दोनों देश सैन्य संबंधों के साथ-साथ रक्षा उद्योग को सशक्त बनाने पर सहमत हुए हैं। आगे पीएम मोदी ने बताया कि आज हमने आतंकवाद और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में आपसी सहयोग पर चर्चा की। हमने तय किया है कि एनएसए स्तर का एक संवाद मंच भी होना चाहिए। आगे, प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि ग्रीस के पीएम और मैं इस बात से सहमत हैं कि हमारा द्विपक्षीय व्यापार तेजी से बढ़ रहा है और आने वाले समय में भी इसमें बढ़ोतरी की अपार

संभावनाएं हैं। इसलिए, हमने 2030 तक अपने द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने का निर्णय लिया है।

पीएम नरेंद्र मोदी ने कहा कि 40 साल के लंबे अंतराल के बाद कोई भारतीय प्रधानमंत्री ग्रीस आए हैं। फिर भी हमारे रिश्तों की गहराई और गर्माहट कम नहीं हुई है। इसलिए, ग्रीक पीएम और मैंने भारत-ग्रीस संबंधों को रणनीतिक स्तर पर ले जाने का फैसला किया है। हमने रक्षा और सुरक्षा, बुनियादी ढांचे, कृषि, शिक्षा, नई और उभरती प्रौद्योगिकी और कौशल विकास के क्षेत्रों में अपना सहयोग बढ़ाने और अपनी रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने का निर्णय लिया है। आगे प्रेस को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि दोनों देशों के बीच कुशल प्रवासन को आसान बनाने के लिए, हमने जल्द ही एक प्रवासन और गतिशीलता साझेदारी समझौता करने का निर्णय लिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को राष्ट्रपति कैटरीना सकेलारोपोउलो ने पीएम मोदी को सेरिमोनियल वेलकम दिया। उन्हें ग्रीस के दूसरे सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड क्रॉस ऑफ द ऑर्डर ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया। मोदी ने कहा- मैं इस सम्मान के लिए राष्ट्रपति, ग्रीस की सरकार और लोगों को धन्यवाद देता हूं। यह ग्रीस के लोगों का भारत के प्रति आदर भाव दर्शाता है। ग्रीस के प्रधानमंत्री ने कहा- मोदी मेरे दोस्त हैं। कहा जाता है कि 1+1 = 11 भी होते हैं। यहां हम दोनों देशों के बीच दोस्ती की मिसाल कायम करना चाहते हैं।

नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड चैम्पियनशिप में जीता गोल्ड

भारतीय जेवलिन थ्रोअर नीरज चोपड़ा ने वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में इतिहास रच दिया है। टूर्नामेंट के फाइनल में उन्होंने 88.17 मीटर के अपने बेस्ट एफर्ट के साथ गोल्ड जीता। यह चैंपियनशिप हंगरी के बुडापेस्ट में 19 अगस्त से 27 अगस्त तक खेली गई। 25 साल के नीरज वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में गोल्ड मेडल जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी बन गए हैं। उन्होंने पिछले साल यूजीन में वर्ल्ड चैम्पियनशिप में सिल्वर मेडल जीता था, जिसे उन्होंने इस बार गोल्ड में बदला।पाकिस्तान के अरशद नदीम ने सिल्वर जीता। उन्होंने 87.82 मीटर का बेस्ट एफर्ट निकाला। यह चैम्पियशिप 1983 से हो रही है। वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में यह भारत का ओवरऑल तीसरा मेडल है। नीरज की ऐतिहासिक जीत पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बधाई दी। कहा, प्रतिभाशाली नीरज ने अपना सर्वश्रेष्ठ दिखाया है। उनका समर्पण, सटीकता और जुनून, उन्हें न सिर्फ एथलेटिक्स में चैम्पियन बनाता है, बल्कि पूरे खेल जगत में उन्हें उत्कृष्टता का प्रतीक बनाता है। नीरज का पहला थ्रो फाउल रहा ओलिंपिक चैंपियन नीरज चोपड़ा ने फाउल से शुरुआत की। पहले प्रयास में फिनलैंड के ओलिवर हेलैंडर ने 83.38 मीटर स्कोर किया और टॉप पर रहे। नीरज चोपड़ा का अटैम्प्ट

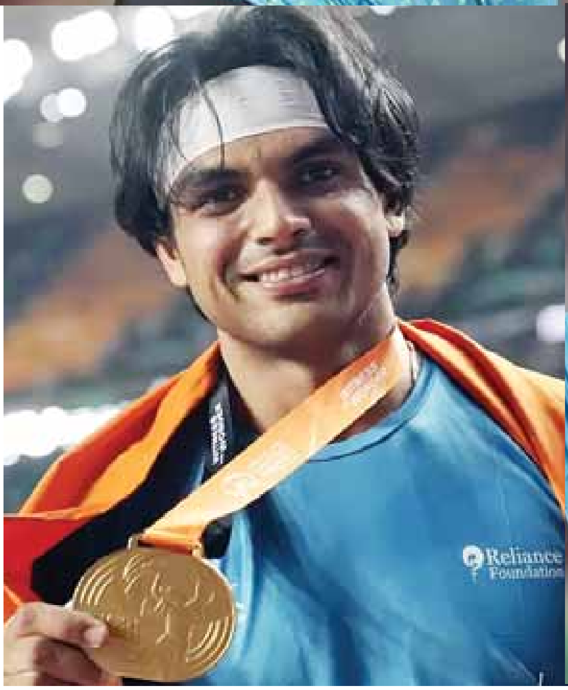

फाउल रहा और वे 12वें नंबर पर रहे। किशोर जेना ने 75.6 और डीपी मनु ने 78.44 मीटर थ्रो किया। पाकिस्तान के अरशद नदीम ने 74.80 मीटर डिस्टेंस तक भाला फेंका।

दूसरा ़ टॉप पर आए नीरज नीरज ने दूसरे प्रयास में 88.17 मीटर स्कोर कर जेवलिन फाइनल का बेस्ट स्कोर किया और पहला स्थान हासिल कर लिया। जो आखिरी तक कायम रहा। दूसरे अटैम्प्ट में किशोर जेना ने 82.82 और पाकिस्तान के अरशद ने 82.81 मीटर थ्रो किया। डीपी मनु का थ्रो फाउल रहा, जबकि जर्मनी के जुलियन वेबर 85.79 मीटर के साथ दूसरे और चेक रिपब्लिक के जैकब वादलेच 84.18 मीटर के साथ तीसरे नंबर पर रहे।

Ten important social revolutions set Madhya Pradesh Model as an example of development in the country

Definition of democracy was realised in Madhya Pradesh

Benefiting Ladli Bahnas signifies me being a Chief Minister

Everyone will get housing through Mukhyamantri Jan Awas Yojana, no citizen will remain without a roof

One Jan Sewa Mitra for every 50 families in the state

Chief Minister Shri Shivraj Singh Chouhan has said that every citizen will get a pucca house in the state. No family will be without a roof. The eligible people who are not included in Awas Plus will also be benefitted from the scheme. Mukhyamantri Jan Awas Yojana will be formulated. Chief Minister Shri Chouhan said that the remaining families will also be added to the Ayushman Bharat scheme in Madhya Pradesh to avail treatment facilities. Those families who are not under any tax slab or do not take advantage of health facilities through any other means will be included in Ayushman Yojana. More than 3 crore 50 lakh names have been added to the scheme in Madhya Pradesh. In Madhya Pradesh, the definition of democracy- "of the people, for the people and by the people" has been realised in true sense. The Mukhyamantri Jan Sewa Mitras act as bridge between the public and government. They will be given responsibility of every 50 families. Approximately 3 lakh youths will be associated with this responsibility in the state. To ensure developement in every nook and corner of the state of the state remains opment, For this,the double engine government of the state along with the Cenre is working to reform, perform and transform in true sense.

While congratulating the citizens on the 77th Independence Day, Chief Minister Shri Chouhan said that today is the day to unite India in one thread. It is a day to glorify the sacrifice of the martyrs. This is the day of smiles for 140 crore Indians. The history of India is not limited to 76 years, but can be traced back to ancient ages. When there were no civi-

lization in the world, educational institution like Nalanda and Takshashila were operating in India. The land of India proclaimed Satyamev Jayate. India has always believed in the principle of live and let live. The spirit of 'Vasudhaiva Kutumbakam' and the welfare of the whole world have been in the philosophy of India. The soul of India never died while wishing for everyone's health and happiness. The country became a victim of slavery due to external invasions. Henceforth the freedom struggle commenced and Nana Saheb Peshwa, Mangal Pandey, Rani Laxmi Bai of Jhansi to Vasudev Phadke, Rasbihari Bose, Lal-Bal-Pal famously known as Lala Lajpat Rai, Bal Gangadhar Tilak, Vipinchandra Pal along with Madan Mohan Malviya and Mahatma Gandhi, sacrificed for the country. Many revolutionaries like Bhagat Singh, Chandrashekhar Azad, Subhash Chandra Bose, Veer Savarkar suffered severe punishments but the revolutionaries did not tremble while climbing the gallows. Ashfaq Ullah Khan, Sukhdev, Udham Singh and many revolutionaries sacrificed their lives with the proclamation of Bharat Mata. India got freedom due to such efforts. Simultaneously, the horrors of the partition of the country cannot be forgotten. The nation was divided into pieces. The army was fighting for the freedom of Kashmir. But with ceasefire provisions like Article 370 brought forth the matter of two constitutions, two marks and two heads. Prime Minister Shri Modi have done many historic deeds in the last 9 years to build a glorious, splendid and prosperous India. Chief Minister Shri Chouhan said that former Prime Minister Late Atal ji had also said that India is not just a piece of land. India is a living proud nation. This is the land of warriors and sages. We have to live and die for the nation. After the cremation, our ashes will also flow in the Ganges, even then the sound of Bharat Mata Ki Jai will be heard.

Union Home Minister releases the report card of MP

Madhya Pradesh adopts holistic approach to development

Bhopal. Union Minister for Home and Cooperatives Shri Amit Shah said that Madhya Pradesh is staying ahead in all spheres of development. He said that Madhya Pradesh has adopted a holistic approach to development. Efforts have been made to facilitate Madhya Pradesh join the league of developed states. The Chief Minister Shri Shivraj Singh Chouhan has made Madhya Pradesh a progressing fast. Shri Shah was addressing after releasing Madhya Pradesh's report card (2003-2023) in the Garib Kalyan Maha Abhiyan (Drive for Welfare of the Poor)at Kushabhau Convention Center in Bhopal today.Madhya Pradesh was once referred to as the most backward state. Today it is referred to as a State with Unparalleled Development. What was once considered a laggard is now standing tall in every sphere. From the perspective of development, Madhya Pradesh excels in every development parameter, which was once written off.Shri Shah said that in the Amrit Kaal of Azadi, we have to achieve sustainable development. Since 2014, Prime Minister Shri Modi has been giving supporting Madhya Pradesh wholeheartedly. Madhya Pradesh has come out of the bracket of Bimaru states. Referring to an economist's notion of Bimaru states, Shri Shah said that these bimaru states were obstacles in the country's growth. It was

said that reforms in these states is not easy. But Madhya Pradesh overcame this tag. Under the leadership of Chief Minister Shri Shivraj Singh Chouhan, Madhya Pradesh has set itself free from being a Bimaru state. We have been successful in making the state self-reliant in all major sectors like agriculture, medical and engineering education, welfare of women, road, water, electricity and health. The need to provide benefits of schemes to the poor, Madhya Pradesh has done a remarkable work in the last 20 years. Madhya Pradesh became a unique state by working in the interest of the people. The law and order situation has improved along with electricity, water, roads, health and good governance. Union Minister Shri Shah said that the once a Bimaru State Madhya Pradesh on top in many ways ensuring public welfare. Welfare schemes have been implemented at ground level.

In past, there was no road in Madhya Pradesh. Only potholes were there. I have visited Mahakal for darshan several times through the Dahod route. I used to sleep sound until Dahod, but used to wake up suddenly the moment I entered Madhya Pradesh due to bumpy roads. There used to be around 60,000 kilometers of roads, but now, by over 5,10,000 kilometers of roads have been constructed. The national highway has expanded from 4,800 kilometers to an impressive 13,000 kilometers. Union Minister Shri Shah said that Madhya Pradesh is at the forefront in taking poor people out of poverty. In the last 20 years, remarkable work has been done in education, road, agricultural growth rate, wheat procurement, paddy procurement, distribution of ration, upgradation of schools, implementation of tourism sector projects, operation of schemes, opening of new industrial training institutes, construction of national highways, construction of airports development, energy production. He also referred to initiatives like Statue of Shankaracharya in Omkareshwar and initiative to start Advait Sansthan.

लाल किले से तीन बुराईयों का किया जिक्र भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टीकरण के खिलाफ आवाज उठाने की अपील

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अगले वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों में जीत हासिल करने को लेकर जनता को आश्वस्त कर दिया है। उन्होंने लाल किले की प्राचीर से 77वें स्वतंत्रता दिवस समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने विश्वास जताया कि वो अगले वर्ष फिर से लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे। यानी उन्होंने लोकसभा चुनाव 2024 में जीत की भविष्यवाणी भी कर दी है। उन्होंने कहा कि जनता से को भी वादे उन्होंने किए हैं उनकी प्रगति वो जनता के सामने अगले वर्ष पेश करेंगे। उन्होंने कहा कि बदलाव का वादा मुझे यहां ले आया। मेरा प्रदर्शन मुझे एक बार फिर यहां ले आया। आने वाले पांच साल अभूतपूर्व विकास के हैं। वर्ष 2047 तक एक विकसित राष्ट्र के रूप में भारत के सपने को साकार करने के लिए यह एक स्वर्णिम क्षण है। गौरतलब है कि वर्ष 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ये अंतिम संबोधन था। उन्होंने इस दौरान कहा कि ''अगली बार 15 अगस्त को इसी लाल किले से मैं आपको देश की उपलब्धियां, आपके सामर्थ्य, आपके संकल्प, उसमें हुई प्रगति, उसकी सफलता और गौरवगान... पूरे आत्मविश्वास के साथ आपके सामने प्रस्तुत करूंगा।'' इस दौरान पीएम मोदी ने तीन बुराईयों भ्रष्टाचार, परिवारवाद और तुष्टीकरण का जिक्र किया और इन्हें को लोकतंत्र की तीन ऐसी विकृतियां करार दिया, जिनसे देश तथा समाज का बहुत नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा कि इन तीनों 'बीमारियों' के खिलाफ उनकी जंग जारी रहेगी। लाल किले की प्राचीर से 77वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वर्ष 2047 तक देश को विकसित राष्ट्र बनाने की राह में अगर कुछ रुकावटें हैं तो ये विकृतियां ही हैं। उन्होंने कहा, ''पिछले 75 सालों में कुछ विकृतियां ऐसे घर कर गई हैं, हमारी सामाजिक व्यवस्था का ऐसा हिस्सा बन गई हैं...। कभी-कभी तो हम आंख भी बंद कर लेते हैं। लेकिन अब आंखें बंद करने का समय नहीं है। संकल्पों को सिद्ध करना है तो हमें आंख-मिचौली खत्म करके, आंख में आंख डालकर तीन बुराइयों से लड़ना है। यह समय की बहुत बड़ी मांग है।'' मोदी ने कहा कि हमारे देश की सभी समस्याओं की जड़ में भ्रष्टाचार है, जिसने दीमक की तरह देश की सारी व्यवस्थाओं को, देश के सामर्थ्य को पूरी तरह नोच लिया है। उन्होंने

कहा, ''भ्रष्टाचार से मुक्ति के लिए लड़ाई जारी रहेगी। यह मोदी के जीवन की प्रतिबद्धता है। मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ता रहूंगा।'' राजनीति में परिवारवाद का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि इसने देश को लूट लिया है और तबाह किया है। उन्होंने कहा, ''इसने जिस प्रकार से देश को जकड़ कर रखा है, उसने देश के लोगों का हक छीना है।'' तुष्टीकरण को 'तीसरी बुराई' करार देते हुए मोदी ने कहा कि इसने देश के मूलभूत चिंतन और सर्वसमावेशी राष्ट्रीय चरित्र को दाग लगाया है और उसे तहस-नहस कर दिया है। बगैर किसी राजनीतिक दल का नाम लिए उन्होंने कहा, ''इन लोगों ने देश का बहुत नुकसान किया है। इन तीनों बुराइयों के खिलाफ पूरे सामर्थ्य के साथ लड़ना है। भ्रष्टाचार, परिवारवाद, तुष्टीकरण देश के लोगों की आकांक्षाओं का दमन करते हैं।'' इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि गरीब हों, दलित हों, पिछड़े हों, पसमांदा हों या फिर आदिवासी भाई-बहन, इनके हक के लिए तीनों बुराइयों से मुक्ति पानी है। उन्होंने कहा, ''हमें भ्रष्टाचार के खिलाफ नफरत का माहौल बनाना है। जैसे हमें गंदगी पसंद नहीं है तो हम उससे नफरत करते हैं। सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार से बड़ी गंदगी नहीं हो सकती है। इसलिए हमारे स्वच्छता अभियान को एक नया मोड़ देते हुए भ्रष्टाचार से मुक्ति पाना है।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले सालों में सरकार ने भ्रष्टाचारियों की जो संपत्ति जब्त की है वह पहले की तुलना में 20 गुना ज्यादा है। उन्होंने कहा, ''आपकी कमाई का यह पैसा लोग लेकर भागे थे। 20 गुना ज्यादा संपत्ति को ज़ब्त करने का काम किया है हमने। इसलिए ऐसे लोगों की मेरे प्रति नाराजगी होना स्वाभाविक है। लेकिन मुझे भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को आगे बढ़ाना है।'' मोदी ने कहा कि ये तीनों विकृतियां भारत के लोकतंत्र को कभी मजबूती नहीं दे सकतीं। उन्होंने कहा ''यह बीमारी है। परिवारवादी पार्टियों का मंत्र है परिवार का, परिवार के द्वारा और परिवार के लिए। परिवारवाद और भाई भतीजावाद प्रतिभाओं के दुश्मन होते हैं। परिवारवाद से मुक्ति इस देश के लोकतंत्र के लिए जरूरी है। सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय यानी हर किसी को उसका हक मिले। इसलिए सामाजिक न्याय के लिए भी यह बहुत जरूरी है।'' प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार, तुष्टिकरण और परिवारवाद को विकास का सबसे बड़ा दुश्मन बताते हुए कहा, ''अगर देश विकास चाहता है, अगर देश 2047 में विकसित भारत का सपना साकार करना चाहता है, तो हमारे लिए आवश्यक है कि हम किसी भी हालत में देश में इन्हें सहन नहीं करेंगे।

कांग्रेस के लिए मास्टर स्ट्रोक से कम नहीं है राहुल की सजा पर रोक, विपक्ष होगा मजबूत

मोदी सरनेम मामले में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। अब राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता भी बरकरार हो जाएगी। वे चुनाव भी लड़ सकेंगे। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले को कांग्रेस नेता, विपक्षी दलों के गठबंधन इंडिया और खुद के लिए किसी मास्टर स्ट्रोक से कम नहीं मान रहे हैं। राहुल गांधी की सजा पर रोक लगना, इससे विपक्षी एकता को मजबूती मिलेगी। कांग्रेस पार्टी के नेता सचिन पायलट कहते हैं, संसद में राहुल की उपस्थिति का निश्चित तौर पर फायदा मिलेगा। इस साल होने वाले चार राज्यों के विधानसभा चुनाव और अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव में विपक्षी गठबंधन को ज्यादा मजबूती मिलेगी। संसद में कांग्रेस पार्टी और विपक्ष का दबदबा बढ़ जाएगा। सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद कांग्रेस पार्टी में जश्न का माहौल है। मोदी सरनेम केस में राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता खत्म होने के बाद सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे की जोड़ी संसद में विपक्षी एकता को आगे बढ़ाने में लगे थे। अब उन्हें राहुल गांधी का साथ मिलेगा। अगर जल्द ही राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाल होती है, तो वे मणिपुर हिंसा पर विपक्ष द्वारा लाए गए अविश्वास प्रस्ताव पर बोलेंगे। कांग्रेस नेता सचिन पायलट इस बात को स्वीकार करते हैं कि इससे विपक्षी गठबंधन को नई ताकत मिलेगी। आम जनता में यह धारणा बनने लगी थी कि न्यायपालिका को प्रभावित किया जा रहा है।

राहुल गांधी की सजा पर रोक लगना, इससे न्यायपालिका के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ गया है। राहुल गांधी को पद से कोई मोह नहीं रहा है। वे विपक्षी गठबंधन की बैठकों में साफ कर चुके हैं कि कांग्रेस पार्टी को पीएम पद से कोई लेना देना नहीं है। पद के पीछे वे कभी नहीं भागे हैं। पद का लोभ न कांगेस पार्टी

को है और न ही राहुल गांधी को है। राहुल गांधी का एक ही मकसद है, लोकसभा चुनाव में विपक्षी एकता को मजबूती से आगे बढ़ाना है। अब राहुल गांधी, सदन में जनहित के मुद्दों को और ज्यादा मजबूती से उठाएंगे। दरअसल, यदि राहुल को हुई दो साल की सजा लागू हो जाती तो उनके छह साल तक चुनाव लड़ने पर भी रोक लग जाती। इससे वे 2024 के साथ-साथ 2029 के लोकसभा चुनाव में भी हिस्सा न ले पाते। इससे कांग्रेस की संभावनाओं को गहरा झटका लग सकता था। कांग्रेस के साथ यह इंडिया गठबंधन को भी नुकसान पहुंचाता, जो कांग्रेस और राहुल गांधी के इर्दगिर्द पीएम नरेंद्र मोदी को घेरने की तैयारी कर रहा है। राहुल गांधी के जेल जाने से विपक्ष का हमलावर रुख भी कमजोर पड़ सकता था। इस संदर्भ में राहुल गांधी की सजा पर रोक कांग्रेस के साथ साथ पूरे विपक्ष के लिए बूस्टर डोज की तरह काम करेगा। इसके पहले भी कई कारणों से भाजपा बैकफुट पर थी। मणिपुर हिंसा को लेकर विपक्ष लगातार सरकार को घेर रहा है। इसी बीच भाजपा शासित हरियाणा के नूंह में हुई हिंसा ने भी भाजपा को बैकफुट पर ला दिया था। इसी बीच आये सर्वोच्च न्यायालय के इस निर्णय ने विपक्ष के हाथों एक और मुद्दा पकड़ा दिया है। इससे सोमवार से संसद में विपक्ष ज्यादा आक्रामक तरीके से सरकार पर हमला

कांग्रेस की नई कार्यसमिति पार्टी को फिर से चुनाव जिताने का माद्दा है

कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खरगे ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार संभालने के दस महीने बाद कांग्रेस कार्यसमिति (कांग्रेस वर्किंग कमेटी) की घोषणा कर दी है। नई कार्य समिति में कल 39 सदस्य बनाए गए हैं। वहीं 32 लोगों को स्थाई आमंत्रित सदस्य तथा 13 लोगों को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया है। जिनमें कांग्रेस के चारों अग्रिम संगठनों युवक कांग्रेस, एनएसयूआई, महिला कांग्रेस और सेवादल के प्रमुखों को भी शामिल किया गया है। इस तरह कांग्रेस वर्किंग कमेटी से कुल 84 नेताओं को जोड़ा गया है। कार्य समिति में जहां वरिष्ठ नेताओं को तवज्जो दी गई है वहीं बड़ी संख्या में नए लोगों को भी शामिल किया गया है।

आगामी लोकसभा चुनाव को ध्यान में रखते हुए कार्य समिति के माध्यम से सभी को साधने का प्रयास किया गया है। कार्यसमिति में सोनिया गांधी, मनमोहन सिंह, राहुल गांधी, अधीर रंजन चौधरी, एके एंथोनी, अंबिका सोनी, मीरा कुमार, दिग्विजय सिंह, सलमान खुर्शीद, प्रियंका गांधी वाड्रा, मुकुल वासनिक, आनंद शर्मा, अजय माकन, जयराम रमेश, भंवर जितेंद्र सिंह और तारिक अनवर जैसे पुराने लोगों को जगह दी गई है। वहीं सचिन पायलट, दीपक बावरिया, जगदीश ठाकोर, गुलाम अहमद मीर, अविनाश पांडे, दीपादास मुंशी, गौरव गोगोई, कमलेश्वर पटेल, सैयद नासिर हुसैन, महेंद्रजीत सिंह मालवीय जैसे नए लोगों को भी शामिल किया गया है। कार्य समिति में कांग्रेस महासचिव मुकुल वासनिक, कुमारी शैलजा, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी को प्रमुख दलित चेहरे के रूप में शामिल किया गया है। वहीं सलमान खुर्शीद, तारिक अनवर, गुलाम अहमद मीर, सैयद नासिर हुसैन मुस्लिम समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। कार्य समिति में श्रीमती सोनिया गांधी, प्रियंका गांधी, अंबिका सोनी, मीरा कुमार, कुमारी शैलजा, दीपा दास मुंशी को बैतोर महिला सदस्य नई कार्यसमिति में शामिल किया गया है। वहीं प्रतिभा सिंह, मीनाक्षी नटराजन, फूलों देवी नेताम और रजनी पटेल को स्थाई आमंत्रित सदस्य तथा यशोमती ठाकुर, सुप्रिया श्रीनेत, परिणीति शिंदे और अलका लांबा कार्यसमिति में विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल हैं। महिला कांग्रेस की प्रमुख नेट्टा डिसूजा पदेन सदस्य के रूप में शामिल की गई हैं। इस तरह 84 सदस्यों की कार्यकारिणी में 15 महिला नेताओं को स्थान मिला है।कांग्रेस की नवगठित वर्किंग कमेटी में आनंद शर्मा, शशि थरूर, मनीष तिवारी समेत जी-23 के कई ऐसे नेताओं को भी जगह मिली है जो कांग्रेस आलाकमान के कई निर्णयों से नाराज चल रहे थे। इससे पार्टी कार्यकर्ताओं में यह संदेश गया है कि पार्टी सभी को साथ लेकर चलने का प्रयास कर रही है। यदि कोई पार्टी नेता पार्टी के किसी निर्णय से नाराज है तो भी पार्टी की मुख्य धारा में शामिल रहेगा। कांग्रेस कार्यसमिति से पार्टी के चारों मुख्यमंत्रियों को बाहर रखा गया है। जबकि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पार्टी के सबसे वरिष्ठ नेता हैं और पिछले वर्ष उनका नाम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के लिए तय हो गया था। यह पहला मौका है जब मुख्यमंत्रियों को कार्यसमिति में शामिल नहीं किया गया है।

कांग्रेस ने उदयपुर में संपन्न हुए अपने चिंतन शिविर और रायपुर के महाधिवेशन में तय किया था कि पार्टी संगठन में सभी स्तर के पदों में से आधे पदों पर 50 साल से कम उम्र के नेताओं को पदाधिकारी बनाया जायेगा। मगर मौजूदा कार्यसमिति में वरिष्ठ नेताओं की संख्या अधिक है। फिर भी काफी संख्या में नए लोगों को पहली बार कार्य समिति में शामिल कर पार्टी ने नया नेतृत्व आगे लाने का एक सफल प्रयास किया है।नवगठित कार्यसमिति में लोकसभा से 9 व राज्यसभा से 14 सांसदों को भी शामिल किया गया है। लोकसभा से सोनिया गांधी, राहुल गांधी, अधीर रंजन चौधरी, शशि थरूर व गौरव गोगोई को कांग्रेस कार्य समिति का सदस्य बनाया गया है। प्रतिभा सिंह, मनीष तिवारी को स्थाई आमंत्रित सदस्य व के सुरेश व मणिकम टैगोर को विशेष आमंत्रित सदस्य बनाया गया है। वहीं राज्यसभा से पार्टी अध्यक्ष मलिकार्जुन खरगे, पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, दिग्विजय सिंह, पी चिदंबरम, मुकुल वासनिक, अभिषेक मनु सिंघवी, जयराम रमेश, रणदीप सिंह सुरजेवाला, सैयद नासिर हुसैन, केसी वेणुगोपाल को कार्यसमिति का सदस्य बनाया गया है। दीपेंद्र सिंह हुड्डा, फूलों देवी नेताम, रजनी पटेल स्थाई आमंत्रित तथा राजीव शुक्ला विशेष आमंत्रित सदस्य बनाए गए हैं।

शाह ने दिलाया 150 से ज्यादा सीटें जीतने का संकल्प

गृहमंत्री अमित शाह ने ग्वालियर में हुंकार भरते हुए कहा कि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना है। आप सभी लोग अपने-अपने क्षेत्र में जाकर बूथ को मजबूत करें और जीत के लिए वातावरण का निर्माण करें। उन्होंने सभी को भाजपा की ऐतिहासिक जीत के लिए संकल्प दिलाया। इस अवसर पर मंच पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, चुनाव प्रभारी भूपेन्द्र यादव, सह प्रभारी अश्विनी वैष्णव, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया सहित अन्य मंत्रीगण व पदाधिकारी उपस्थित थे। केन्द्रीय मंत्री अमित शाह ने कहा कि केन्द्र सरकार और प्रदेश की भाजपा सरकार ने हर तरफ विकास ही नहीं किया है बल्कि हर वर्ग के कल्याण के लिए योजनाएं बनाकर उनका सफल क्रियान्वयन किया है। उन्होंने कहा कि इन योजनाओं के लाभान्वित होने वाले लोगों के साथ ही प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचना होगा। इस अवसर पर मंच पर केन्द्रीय मंत्री प्रहलाद पटेल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, पूर्व मंत्री जयभान सिंह पवैया, पूर्व मंत्री अनूप मिश्रा सहित प्रदेश भर से आए भाजपा के पदाधिकारी मंत्री, सांसद, विधायक, महापौर, निगम मण्डलों के अध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री शिवप्रकाश ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि अब सभी का एक ही लक्ष्य होना चाहिए प्रदेश में फिर से भाजपा की सरकार ही नहीं बनें वरन हम ऐतिहासिक जीत हासिल करें। इसके लिए सभी को जुटना होगा। बूथ को शक्तिशाली बनाने के लिए अब सारी ताकत लगानी होगी। बूथ जीते तो चुनाव भी हमारे हाथ में होगा। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री एवं प्रदेश चुनाव प्रभारी भूपेन्द्र यादव, केन्द्रीय मंत्री एवं प्रदेश चुनाव अभियान समिति के संयोजक नरेन्द्र सिंह तोमर, सह प्रभारी एवं रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव सहित 1800 प्रतिनिधि उपस्थित थे।बैठक में राजनीतिक प्रस्ताव पारित किए गए। इन प्रस्तावों को पढ़कर सुनाया गया और सभी ने इन प्रस्तावों का समर्थन किया।प्रदेश कार्यसमिति की बैठक सुबह 10 बजे शुरु होना थी। मंच पर सभी शीर्ष नेता पहुंच चुके थे लेकिन सभागार में अपेक्षित पदाधिकारी नहीं पहुंचे थे। ये पदाधिकारी सभागार के बाहर इधर-उधर चर्चाओं में व्यस्त थे। जब ग्यारह बजे तक अपेक्षित लोग नहीं पहुंचे तब केन्द्रीय मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर को बाहर आना पड़ा और उन्होंने सभी पदाधिकारियों से कहा कि 11 बज चुके हैं आप लोग अभी तक बाहर है, कार्यक्रम लेट हो रहा है, सभी लोग सभागार में आएं, तब जाकर पदाधिकारी अंदर पहुंचे और बैठक शुरु हो सकी।भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में अपेक्षित पदाधिकारियों का सभागार के बाहर ही बने पण्डालों में रजिस्ट्रेशन किया गया। इसके बाद उन्हें किट दी गई जिसमें एक बैग, पेन-डायरी,

भाजपा का दुपट्टा दिया गया।कार्यसमिति में भगवा रंग हर तरफ नजर आ रहा था। बैठक में शामिल सभी पदाधिकारियों को भगवा रंग की टोपी दी गई थी, यह टोपी सभी लोग लगाए हुए थे, इस कारण आयोजन स्थल पर हर तरफ भगवा-भगवा ही नजर आ रहा था। वहीं दूसरी ओर प्रदेश कार्यसमिति को लेकर आयोजन स्थल एवं आस-पास का क्षेत्र झंडे और बैनर, पोस्टरों से पटा हुआ नजर आ रहा था। यहीं नहीं शहर भर में चौराहों और मार्गों में भी भाजपा के झंडे और होर्डिंग तथा बैनर नजर आ रहे थे।

चुनावों से पहले लोकलुभावन वादों की झड़ी

मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव को लेकर सभी पार्टियां लोकलुभावन वादें कर रही हैं। कांग्रेस ने प्रदेश की जनता को कुछ गारंटी दी थीं। इनमें से छह गारंटी दमदार थी, जिससे कांग्रेस प्रदेश की सियासत में बाजी पलट सकती थी। शिवराज सिंह चौहान ने इनमें से तीन दमदार गारंटियों को कांग्रेस से छीन लिया है। ऐसे में पार्टी की मुश्किलें बढ़ जाएंगी। उन्होंने इन गारंटियों को सिर्फ छीना ही नहीं बल्कि उस पर अमल में भी शुरू हो गया है। 27 अगस्त को एक झटके में तीन घोषणाओं से कांग्रेस को चित कर दिया है।दरअसल, विधानसभा चुनाव से पहले एमपी में कांग्रेस ने छह गारंटी दी थी। इनमें से सबसे प्रमुख तीन थे। कांग्रेस ने वादा किया था कि लाड़ली बहना योजना की जगह हम नारी सम्मान योजना लाएंगे। इसके तहत हम महिलाओं को 1500 रुपए हर महीने देंगे। साथ ही कांग्रेस ने महिलाओं को 500 रुपए में गैस सिलेंडर देने का वादा किया है। इसके अलावा 100 यूनिट तक बिजली फ्री और 200 यूनिट पर हाफ बिजली बिल की गारंटी दी थी।दरअसल, शिवराज सिंह चौहान ने 27 अगस्त को प्रदेश की बहन-बेटियों को बड़ा तोहफा दिया है। उन्होंने एक झटके में कांग्रेस की तीन गारंटी को छीन लिया है। आइए आपको सिलसिलेवार तरीके से बताता हूं कि शिवराज ने कमलनाथ की कौन-कौन की गारंटी छीन लिया है। कमलनाथ ने गारंटी दी थी कि नारी सम्मान योजना लाएंगे और इसके तहत महिलाओं को 1500-1500 रुपए देंगे। कांग्रेस की तरफ से इसके फॉर्म भी भरवाए जा रहे थे। इसके बाद शिवराज सिंह चौहान ने ऐलान कर दिया कि हम लाड़ली बहना योजना की राशि 3000 रुपए तक बढ़ाएंगे। अक्टूबर से इस राशि को 1250 रुपए करने की घोषणा कर दी है। ऐसे में चुनाव की तारीख की घोषणा से पहले महिलाओं को 1250 रुपए मिलने लगेंगे। शिवराज

की घोषणा से कांग्रेस की मुश्किलें बढ़ गई हैं। वोटरों को भरोसा दिलाना उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती होगी। इसके साथ ही प्रदेश में कांग्रेस ने गारंटी दी थी कि हमारी सरकार आई तो हम गैस सिलेंडर 500 रुपए में देंगे। 27 अगस्त को शिवराज सिंह चौहान ने कांग्रेस से इस गारंटी को भी छीन लिया है। उन्होंने ऐलान कर दिया है कि सावन के महीने में महिलाओं को 450 रुपए में गैस सिलेंडर मिलेंगे। साथ ही शिवराज सिंह चौहान ने कह दिया कि आगे कोशिश करूंगा कि गैस सिलेंडर कम दाम में ही मिले। वहीं, कांग्रेस ने प्रदेश की जनता को यह भी गारंटी दी है कि हमारी सरकार आएगी तो 100 यूनिट बिजली फ्री रहेगी। साथ ही 200 यूनिट पर बिजली बिल हाफ हो जाएगा। शिवराज सिंह चौहान ने इस पर भी बड़ा दांव चल दिया। उन्होंने ऐलान कर दिया कि एमपी में गरीब महिलाओं को 100 रुपए से ज्यादा बिजली बिल नहीं आएगा। गौरतलब है कि शिवराज सिंह चौहान कांग्रेस की दमदार गारंटियों को छीन लिया है। चर्चा है कि सरकार ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर भी कुछ बीच का रास्ता निकालेगी। ऐसे में कांग्रेस के पास उसके वचन में पत्र में पब्लिक को लुभाने के लिए कुछ खास नहीं बचा है। शिवराज सिंह चौहान ने जब ये सारी घोषणाएं कर रहे थे, तब कमलनाथ ने 11 वचन जारी किए हैं।

झाबुआ में कमल नाथ ने कहा

भाजपा को आदिवासियों के लिए माफी यात्रा निकालनी चाहिए

सीधी से 19 जुलाई को आरंभ हुई कांग्रेस की आदिवासी स्वाभिमान यात्रा के समापन कार्यक्रम में शामिल होने सोमवार को झाबुआ पहुंचे पूर्व मुख्यमंत्री व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमल नाथ ने कहा कि मध्य प्रदेश में आदिवासियों पर अत्याचार लगातार बढ़ रहे हैं। केंद्र सरकार की रिपोर्ट कहती है कि आदिवासियों पर अत्याचार के मामले में प्रदेश नंबर एक पर है। शिवराज सरकार विकास पर्व मना रही है, इसे लेकर यात्राएं निकाल रही है, मगर उन्हें तो माफी यात्रा निकालनी चाहिए।कथा वाचक धीरेंद्र शास्त्री की कथा को लेकर उन्होंने मीडिया से चर्चा में कहा कि हमने छिंदवाड़ा में धीरेंद्र शास्त्री को नहीं बुलवाया। श्रद्धालुओं द्वारा आयोजन किया जा रहा है। वे आए हैं तो उनका हम स्वागत करते हैं। कुछ दिनों बाद कथावाचक प्रदीप मिश्रा भी छिंदवाड़ा आ रहे हैं। हम उनका भी स्वागत करेंगे। नाथ ने कहा कि गृहमंत्री अमित शाह लगातार प्रदेश में आ रहे हैं। उनका स्वागत है, परंतु शिवराज सिंह चौहान उनसे भी झूठ बुलवाते हैं। शाह छिंदवाड़ा भी गए। उन्हें जो सूची दी गई, उसमें सब झूठ था। स्वाभिमान यात्रा के समापन अवसर पर आयोजित आदिवासी सम्मेलन में कमल नाथ ने कहा कि आदिवासी जमीन के असली मालिक हैं, अधिकारी उनके पट्टे निरस्त कर देता है, जबकि कलेक्टर को आदिवासियों से पट्टा मांगना चाहिए। आदिवासी सब कुछ सीख गए हैं, लेकिन अब तक मुंह चलाना नहीं सीखे। आदिवासियों पर बढ़ते अत्याचार का जिक्र करते उन्होंने कहा कि आदिवासियों को आखिर कितना अपमान व अत्याचार सहना पड़ेगा? कई घटनाएं तो सामने ही नहीं आ पाती हैं।भाजपा सरकार पर घोटालों व भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए उन्होंने अपनी सरकार गिरने के बारे में कहा कि उन्होंने सौदा करने के बजाए नीति व नियम का पालन किया। अब जनता को कांग्रेस या उनका नहीं, बल्कि सच्चाई का साथ देने के लिए आगे आना होगा।

कमलनाथ बोले- कार्यकर्ता हमारे आंख-कान, मतदान केंद्रों पर जुट जाएं

कांग्रेस पार्टी प्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता पार्टी की तर्ज पर बूथ मैनेजमेंट करने जा रही है। भाजपा बूथ मैनेजमेंट को जितनी मजबूती के साथ तैयार करती है और उसे चुनावी कार्य सौंपती है, कांग्रेस पार्टी भी इस बार उसी तर्ज पर कार्य करने जा रही है। इसका खुलासा गुरुवार को भोपाल में कांग्रेस सेवा दल के प्रांतीय सम्मेलन में हुआ है। मानस भवन में आयोजित सेवा दल के प्रांतीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ ने कहा कि कांग्रेस सेवादल के कार्यकर्ता हमारें आंख-कान हैं। आप सब लोग मतदान केंद्रों पर जुट जाएं। पार्टी ने विधानसभा स्तर पर नायक और बूथ स्तर पर प्रभारी नियुक्त कर दिए हैं। आप सब लोग पार्टी के लिए कार्य करें और प्रदेश में सरकार बनाएं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष कमलनाथ ने सेवादल के प्रदेश और जिला पदाधिकारियों से कहा कि कमजोर मतदान केंद्रों का जिम्मा सेवादल कार्यकर्ताओं को सौंपें। कमलनाथ ने कहा कि आप लोग मतदान केंद्रों पर मतदान संपन्न होने तक डटे रहें। कौन क्या कर रहा है, कहां गड़बड़ी हो रही या पार्टी की तैयारी में कमी है उसकी सूचना भी अवश्य दें।कांग्रेस पार्टी के सूत्रों की मानें तो कांग्रेस सेवादल ने निर्देश मिलने के बाद प्रदेश संगठन से हर विधानसभा क्षेत्र से 35-35 मतदान केंद्रों की जानकारी मांगी है, जहां कांग्रेस पार्टी लगातार हारती आ रही है या बहुत कम वोट मिल रहे हैं। कमलनाथ ने कांग्रेस सेवादल के कार्यकर्ताओं को प्रदेश स्तरीय सम्मेलन आयोजित कर प्रशिक्षण देने को कहा है। प्रशिक्षण में मतदान केंद्रों पर कार्य करने के तौर-तरीकों को बताने के साथ भाजपा या अन्य विपक्षी पार्टियों द्वारा की जाने वाली संभावित गड़बड़ियों का किस प्रकार से नजर रखना है, कैसे पकड़ना है।

शिवराज कैबिनेट का विस्तार

मध्य प्रदेश में बीजेपी सरकार के मंत्रिमंडल का विस्तार आखिरकार हो गया. विधानसभा चुनाव आचार संहिता लगने के करीब 45 दिन पहले हुए शिवराज कैबिनेट विस्तार से क्षेत्रीय संतुलन और जातिगत समीकरण को साधने की कोशिश की गई है. भाजपा ने विंध्य, महाकौशल और बुंदेलखंड क्षेत्र से तीन मंत्री बनाकर कुल 94 सीट में से 70 से ज्यादा सीट पर कब्जा करने की रणनीति बनाई है. यहां अभी भाजपा के पास केवल 54 सीट है. कांग्रेस ने पिछले चुनाव में बेहतर प्रदर्शन किया था और 39 सीट हथिया ली थी. कुल 35 मंत्री में से एक पद अभी खाली रखा गया है. नए विस्तार के समीकरण को अगर समझा जाए तो विंध्य से राजेंद्र शुक्ल, महाकौशल से गौरीशंकर बिसेन ओर बुंदेलखंड से राहुल सिंह लोधी को मंत्री बनाया गया है. पार्टी ने तीनों अंचल में 94 में से 70 से ज्यादा सीट जिताने का टारगेट दिया है. इसमें सामान्य और ओबीसी वर्ग को साधने की कवायद भी नजर आई है. शुक्ल सामान्य वर्ग से है, जबकि बिसेन और लोधी दोनों ओबीसी वर्ग से मंत्री बनाए गए हैं. मंत्रिमंडल में अब मुख्यमंत्री के अलावा मंत्रियों की संख्या बढ़कर 33 हो गई है। इसमें 25 कैबिनेट मंत्री और आठ राज्य मंत्री शामिल हैं। दो सौ तीस सदस्यीय राज्य विधानसभा में तय मापदंड के अनुरूप मुख्यमंत्री समेत अधिकतम 35 मंत्री हो सकते हैं। इस तरह अब भी एक पद रिक्त है। विंध्य अंचल से आने वाले राजेंद्र शुक्ल रीवा विधानसभा सीट का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे

पहले भी मंत्री रह चुके हैं। महाकौशल अंचल से आने वाले लगभग 70 वर्षीय गौरीशंकर बिसेन बालाघाट विधानसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और वे पहले भी मंत्री रह चुके हैं। इसके अलावा पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती के नजदीकी रिश्तेदार राहुल लोधी बुंदेलखंड की खरगापुर विधानसभा सीट से विधायक हैं और वर्ष 2018 में पहली बार ही विधायक बने हैं। उन्हें राज्य मंत्री बनाकर अन्य पिछड़ा वर्ग समुदाय को साधने की कोशिश की गई है। राज्य में आगामी नवंबर दिसंबर माह में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं। हालाकि अभी चुनाव कार्यक्रम तय नहीं हुआ है।

क्यों बनाया गया मंत्री

राहुल लोधी: लोधी समाज के प्रदेश में 9 फीसदी वोटर हैं. राहुल युवा चेहरा हैं. इस समाज का असर 40 से ज्यादा सीट पर है. पूर्व सीएम उमा भारती की नाराजगी भी दूर करने की कोशिश की गई है.

राजेंद्र शुक्ल: ब्राह्मण समाज के नेता हैं. विंध्य का बड़ा चेहरा हैं. विंध्य से कोई मंत्री नहीं होने से कार्यकर्ताओं में नाराजगी थी. भाजपा ने 30 सीट में से 24 जीती थी. इसके बावजूद कोई मंत्री नहीं बनाया गया था. शुक्ल के बहाने नाराज ब्राह्मणों को पार्टी के पाले में लाने की सारी कवायद है.

गौरीशंकर बिसेन: 7 बार के विधायक हैं. ओबीसी वर्ग वाले पंवार समाज का बड़ा वोट बैंक है. बालाघाट, मंडला और डिंडोरी जैसे इलाकों में भाऊ की अच्छी पकड़ है. पूर्व सीएम कमलनाथ के गढ़ छिंदवाड़ा में भी सामाजिक वोटर्स है. यहीं वजह से उम्रदराज बिसेन एक बार फिर से मंत्री बनाए गए है.

रक्षा बंधन

भारत त्योहारों का देश है और इसके प्रमुख त्योहारों में से एक है रक्षाबंधन। इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों को राखी बांधती हैं, चाहे उनका भाई उनसे उम्र में छोटा हो या बड़ा। इस दिन सभी उम्र केभाई अपनी बहनों से राखी बंधवाने के बाद उन्हें वचन देते हैं कि वे हर परिस्थिति में उनकी रक्षा करेंगे। हर साल रक्षाबंधन के त्योहार का सभी बहनों को बेसब्री से इंतजार रहता है। इस दिन भाई जहां कहीं भी हो, वे अपनी बहन से मिलने और उनसे राखी बंधवाने उनके पास पहुंच ही जाते हैं। मौका और भी खास हो जाता यदि बहन की शादी हो चुकी हो और वह दूसरे किसी शहर में रहती हो। ऐसे में तो इस त्योहार का इंतज़ार महीनों पहले से ही शुरू हो जाता है। कई दिनों पहले से बहन को ससुराल से मायके लाने की तारीख निश्चित कर ली जाती है। बच्चे भी राखी के त्योहार के लिए बहुत उत्साहित रहते हैं। यह दिन भाई-बहन के बीच प्रेम के अटूट रिश्ते को दर्शाता है। इस दिन सभी बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं, उन्हें मिठाई खिलाकर उनका मुंह मीठा करती हैं और अपनी रक्षा का वचन लेती हैं। राखी बांधने से पहले उनकी आरती उतारने के लिए सुंदर सी थाली सजाती हैं। भाई भी राखी बंधवाने के बाद अपनी बहनों को वचन देने के साथ ही कोई तोहफा व लिफाफा भी देते हैं। रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाए जाने वाले इस पर्व का ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय महत्व भी है भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को मजबूत प्रेम पूर्ण आधार देता है इस दिन बहन भाई की कलाई पर रेशम का धागा बांधती है तथा उसके दीर्घायु जीवन एवं सुरक्षा की कामना करती है। बहन के इस स्नेह से बंधकर भाई उसकी रक्षा के लिए कृत संकल्प होता है। हालांकि रक्षाबंधन की व्यापकता इससे भी कहीं ज्यादा है। राखी देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, धर्म की रक्षा, हितों की रक्षा आदि के लिए भी बांधी जाने लगी है।

सम्मान और आस्था के लिए भी बांधते हैं रक्षा सूत्र

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इस पर्व पर बंग भंग के विरोध में जनजागरण किया था और इस पर्व को एकता और भाईचारे का प्रतीक बनाया था। रक्षा सूत्र सम्मान और आस्था प्रकट करने के लिए भी बांधा जाता है। रक्षाबंधन का महत्व आज के परिप्रेक्ष्य में इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि आज मूल्यों के क्षरण के कारण सामाजिकता सिमटती जा रही है और प्रेम व सम्मान की भावना में भी कमी आ रही है। यह पर्व आत्मीय बंधन को मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ हमारे भीतर सामाजिकता का विकास करता है। इतना ही नहीं यह त्योहार परिवार, समाज, देश और विश्व के प्रति अपने कर्तव्यों के प्रति हमारी जागरूकता भी बढ़ाता है।

रक्षाबंधन के कई नाम

राखी पूर्णिमा को कजरी पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। लोग इस दिन बागवती देव% की भी पूजा करते हैं। रक्षाबंधन को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे विष तारक यानी विष को नष्ट करने वाला, पुण्य प्रदायक यानी पुण्य देने वाला आदि।

ऐसे हुई रक्षाबंधन की शुरुआत

ऐसी मान्यता है कि श्रावणी पूर्णिमा या संक्रांति तिथि को राखी बांधने से बुरे ग्रह कटते हैं। श्रावण की अधिष्ठात्री देवी द्वारा ग्रह दृष्टि-निवारण के लिए महर्षि दुर्वासा ने रक्षाबंधन का विधान किया।

इंद्राणी ने इंद्र को बांधा था रक्षा सूत्र

एक और पौराणिक कथा के अनुसार, एक बार देवों एवं दैत्यों में बारह वर्ष तक युद्ध रोक देने का निश्चय किया, किंतु इंद्र की पत्नी इंद्राणी ने पति की रक्षा एवं विजय के लिए उनके हाथ में वैदिक मंत्रों से अभिमंत्रित रक्षा सूत्र बांधा। इसके बाद इंद्र के साथ सभी देवता विजयी हुए। तभी से इस पर्व को रक्षा के प्रतीक रूप में मनाया जाता है।

विश्व आदिवासी दिवस मनाया

ग्रामीणों को किया सम्मानित

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

ग्वालियर पूर्व विधानसभा के वॉर्ड-59 में विश्व आदिवासी दिवस मनाया गया। जहाँ नीमचंदवा गाँव में लोगों का सम्मान किया और प्रसादी वितरण भी की गई। कार्यक्रम के संयोजक भारतीय राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के सचिव हेवरन सिंह कंसाना के नेतृत्व में। कार्यक्रम में विशेष रूप से जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेंद्र शर्मा, विधायक ग्वालियर पूर्व डॉ. सतीश सिंह सिकरवार, महाराज सिंह पटेल, जिला संगठन के मंत्री सुरेंद्र यादव, सेवा दल के अध्यक्ष हरेंद्र गुर्जर, आईटी सेल के पूर्व अध्यक्ष तरुण यादव, सोहेल ख़ान एवं गूंज मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह आदि उपस्थित रहे।

धूमधाम से मना करिश्री सिंह का जन्मदिन

गूँज़ मीडिया ग्रुप की डायरेक्टर कृति सिंह की पुत्री करिश्री सिंह के जन्मदिन की 8वीं वर्षगांठ बड़ी धूमधाम से बाल रूम संगम वाटिका में मनाई गई। इस अवसर पर परिवारजनों, मंत्रीगण, नेतागण, अधिकारी, डॉक्टर्स एवं ईष्ट मित्रों, समाजसेवी संस्था के पदाधिकारी सभी ने करिशनी को आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम में ऊर्जा मंत्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, महापौर डॉ शोभा सिकरवार, विधायक डॉ. सतीश सिकरवार, दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक, वरिष्ठ बीजेपी नेता मुन्नालाल गोयल, कांग्रेस जिलाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के सचिव हेवरन सिंह कंसाना, पूर्व जिलाध्यक्ष बीजेपी कमल माखीजानी आदि उपस्थित रहे।

जल बचाओ अभियानः भारतीयम विद्या निकेतन में हुई पेंटिंग प्रतियोगिता

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

नगर निगम ग्वालियर, गूँज मीडिया हॉउस एवं दिप्सनीर के इंद्रधनुष कार्यक्रम जल बचाओ अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत भारतीयम विद्या निकेतन स्कूल शिवपुरी लिंक रोड पर बाद विवाद प्रतियोगिता एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में ग्वालियर दक्षिण विधायक प्रवीण पाठक रहे। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रुप में श्रीमती सावित्री श्रीवास्तव, गूँज की डायरेक्टर कृति सिंह , एफ पी ए आई ग्वालियर ब्रांच के कार्यक्रम अधिकारी अच्छेद्र सिंह कुशवाह, विद्यालय के प्राचार्य एवं आकाश जी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय संचालक गौतम भगचंदानी जी द्वारा किया गया।

नगर निगम, गूँज मीडिया हॉउस एवं दिप्सनीर के इंद्रधनुष कार्यक्रम जल बचाओ अभियान कार्यक्रम के अंतर्गत amity university ग्वालियर में open mic का कार्यक्रम का आयोजन किया।

रामकृष्ण मिशन स्कूल में योगोत्सव कार्यक्रम

योगोत्सव की बारिश में भीगा ग्वालियर !

नियमित योग करने से आप फिट रहते हैं।

● **गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर**

इंद्रधनुष, एक कदम जल संरक्षण की ओर कार्यक्रम के तहत आज रामकृष्ण मिशन स्कूल में योगोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया जिसमें 200 छात्रों और 50 से अधिक शहर के गणमान्य नागरिकों ने हिस्सा लिया। ग्वालियर नगर निगम, गूँज संस्था एवं डिप्सनीर इंद्रधनुष कार्यक्रम के तहत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर रही है जिसका उद्देश्य आम जन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक करना है। इसी क्रम में आज यह योगोत्सव का आयोजन किया गया है। इस मौके पर कार्यक्रम कि अध्यक्षता कर रहे एलनआईपीई के योग विभाग के विभागाध्यच्छ श्री नीबू आर कृष्णन ने कहा कि योग केवल एक दिन नहीं बल्कि हर दिन की नियमित प्रक्रिया है। नियमित योग करने से आप फिट रहते हैं

आपको नई ऊर्जा का एहसास होता ह। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे अंतराष्ट्रीय योग गुरु एवं शहर के वरिष्ठ समाजसेवी श्री अनिल संरोदे जी ने कहा कि योग हमारे शारीरक एवं मानसिक व्यायाम का प्राचीनतम अभ्यास है। योग मन, शरीर एवं आत्मा के बीच सामान्य कल्याण और सामंजस्य बिठाने का प्रयास करता है। योग मन और शरीर की एकता, मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य, स्वास्थय और कल्याण के लिए एक समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। कार्यक्रम में 32 अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त योग प्रशिक्षक एवं होनहार छात्रों को सम्मानित भी किया गया। अपने स्वागत उद्बोधन में गूँज की डायरेक्टर सुश्री कृति सिंह जी ने कहा कि हमें विश्व कल्याण की भावना से योग करना चाहिये। अगर नियमित रूप से हम योगासन करेंगे तो न सिर्फ हम अपनी शारीरिक और मानसिक व्याधियों से छुटकारा पा सकेंगे बल्कि स्वस्थ और प्रसन्नचित्त नागरिक के तौर पर समाज

को भी स्वस्थ और प्रसन्नचित्त बना सकेंगें। डिप्सनीर की और से सुश्री दीपाली भटनागर ने जल संरक्षण कि तकनीक और उपायों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अन्य अतिथि स्वामी श्री तपन महाराज, श्री शिशिर श्रीवास्तव, सुश्री सुभाश्री साठे, श्री अछेन्द्र सिंह कुशवाह, श्री राजीव तोमर, भूपेंद्र तोमर, स्तुति सिंह आदि उपस्थित थे। कार्यक्र म में प्रशिक्षक के तौर पर शहर के जाने माने योग प्रशिक्षक श्री गौरव जैन और डॉ ललिता गौरव ने अपनी भागीदारी दी इन्होने कुंछ सामान्य किन्तु महत्वपूर्ण योगाभ्यास भी करवाए ।

सावन में जरूर करें भगवान शिव के इन 5 मंदिरों के दर्शन

महादेव पूरी करेंगे हर मनोकामना

हिंदू धर्म के शास्त्रों में सावन के महीने के महात्म्य के बारे में विस्तार से बताया गया है। सावन माह का हर सोमवार भगवान शिव को समर्पित है। इस दिन महादेव का जलाभिषेक विशेष महत्व होता है। वहीं इस साल अधिक मास के चलते एक नहीं बल्कि दो महीने का सावन होगा। सावन में हजारों की संख्या में भक्त कांवड़ यात्रा कर भगवान शिव को पवित्र जल अर्पित करते हैं। वैसे तो हमारे देश में भगवान शिव के कई फेमस और प्राचीन मंदिर हैं। लेकिन आज हम आपको भगवान भोलेनाथ के 5 ऐसे मंदिरों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्हें काफी चमत्कारी माना जाता है। मान्यता के अनुसार, इन मंदिरों में दर्शन मात्र से ही व्यक्ति के दुख दूर हो जाते हैं।

अमरनाथ महादेव

अमरनाथ धाम हिमालय की गोद में बसा है। यहां पर भगवान शिव के स्वयंभू रूप के दर्शन होते हैं। बता दें कि यहां पर भगवान शिव का प्राकृतिक रूप से लगभग 10 फुट ऊंचा शिवलिंग मौजूद है। आषाढ़ पूर्णिमा से अमरनाथ धाम की यात्रा शुरू होती है और रक्षाबंधन तक चलती है। सावन के महीने में भगवान शिव के दर्शन पाने के लिए भक्त अमरनाथ धाम पहुंचते हैं।

केदारनाथ मंदिर

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग में केदारनाथ धाम स्थित है। इस धाम की गिनती चार धाम में की जाती है। इसके साथ ही केदारनाथ महादेव द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक माना जाता है। मान्यता के अनुसार, सावन के महीने में यहां पर दर्शन करने से व्यक्ति का जीवन सफल हो जाता है। साथ ही व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है।

ओंकारेश्वर महादेव

मध्य प्रदेश में स्थित भगवान शिव के ओंकारेश्वर धाम की गिनती द्वादश ज्योतिर्लिंगों में की जाती है। सावन माह में भगवान ओंकारेश्वर महादेव के दर्शन मात्र से ही व्यक्ति को सभी सुभी दुखों से मुक्ति मिल जाती है। साथ ही कहा जाता है कि चार धाम की यात्रा के बाद ओंकारेश्वर महादेव का दर्शन जरूरी होते हैं। ओंमकारेश्वर के दर्शन करने के बाद ही चार धाम की यात्रा का पुण्यफल प्राप्त होता है।

दक्षेश्वर महादेव मंदिर

भगवान शिव की नगरी हरिद्वार के कनखल में दक्षेश्वर महादेव मंदिर स्थित है। यह भगवान शिव के भक्तों के लिए आस्था का केंद्र है। मान्यता के अनुसार, सावन के पवित्र महीने में महादेव इसी स्थान पर वास करते हैं और अपने भक्तों द्वारा की गई प्रार्थना को सुनते हैं। सावन के महीने में भगवान शिव के दर्शन के लिए लाखों की संख्या में भक्त दक्षेश्वर महादेव मंदिर आते हैं।

बाबा बैद्यनाथ मंदिर

झारखंड के देवघर में स्थित बाबा बैद्यनाथ मंदिर आस्था का केंद्र है। यह बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इसके अलावा माता सती के 52 शक्तिपीठों से एक शक्तिपीठ भी यहां पर स्थित है। बताया जाता है कि यहां पर माता सती का हृदय आकर गिरा था। सावन में लाखों की संख्या में शिवभक्त कांवड़ यात्रा करके भगवान शिव को जल अर्पित करने के लिए यहां आते हैं।

आज भी रहस्य बनी हुई है सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु

भारत के प्रमुख स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सुभाष चंद्र बोस की जिंदगी किसी फिल्मी कहानी की तरह है। उनके जीवन में भी फिल्म की तरह ही एक्शन, रोमांस और रहस्य तीनों ही है। वह आजादी की लड़ाई लड़ने वाले असली हीरो थे। जिन्होंनें अंग्रेजों की गुलामी को स्वीकार न करने हुए आजाद हिंद फौज का गठन किया था। वहीं उनकी लव लाइफ भी काफी ज्यादा दिलचस्प थी। बोस ने अपनी सेक्रेटरी एमिली से लव मैरिज की थी। एमिली मूल रूप से ऑस्ट्रिया की रहने वाली थी। 18 अगस्त को सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु हुई थी। हालांकि बोस की मृत्यु पर आज भी रहस्य बना हुआ था। आइे जानते हैं उवकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर सुभाष चंद्र बोस के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

उड़ीसा के बंगाली परिवार में 23 जनवरी 1897 को सुभाष चंद्र बोस का जन्म हुआ था। उनके 7 भाई और 6 बहनें थी। वहीं बोस अपनी माता-पिता के 9वीं संतान थे। वह अपने भाई शरदचंद्र बोस के काफी नजदीक थे। बोस के पिता जानकीनाथ कटक के महशूर और सफल वकील थे। नेताजी बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में काफी ज्यादा होशियार थे। हालांकि उनकी खेल-कूद में कभी रुचि नहीं रही। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा कटक से पूरी की। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए वह कलकत्ता चले गए। उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज से फिलोसोफी में क्रकिया। यहां पर पढ़ाई के दौरान ही उनके मन में अंग्रेजों के खिलाफ जंग शुरू हुई थी। बोस सिविल सिविल सर्विस करना चाहते थे, ब्रिटिश के शासन के चलते उस समय भारतीयों के लिए यह सर्विस काफी मुश्किल थी। जिसके चलते नेताजी के पिता ने उन्हें सिविल सर्विस की तैयारी के लिए इंग्लैंड भेज दिया। इस परीक्षा में बोस ने चौथा स्थान हासिल किया था। उन्हें इंग्लिश में सबसे ज्यादा नंबर मिले थे। वह विवेकानंद को अपना गुरु मानते थे। इसी के साथ उनके मन में देश की आजादी को लिए भी चिंता थी। इसी कारण साल 1921 में उन्होंने इंडियन सिविल सर्विस की नौकरी ठुकरा दी और वापस भारत आ गए।

आजादी की लड़ाई में योगदान

बता दें कि देश वापस आने के बाद वह आजादी की लड़ाई में कूद गए। उन्होंने कांग्रेस पार्टी ज्वॉइन कर ली। शुरूआत में वह कलकत्ता में कांग्रेस पार्टी के नेता रहे। वह चितरंजन दास के नेतृत्व में काम किया करते थे। बोस चितरंजन दास को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। वहीं साल 1922 में चितरंजन दान से कांग्रेस और नेहरू का साथ छोड़ दिया। जिसके बाद उन्होंने अलग पार्टी स्वराज बना ली। वहीं इस दौरन तक नेता जी ने कलकत्ता के नोजवान, छात्र-छात्रा व मजदूर लोगों के बीच अपनी बेहद खास जगह बना ली थी। वह जल्द से जल्द अपने देश को स्वाधीन भारत के रूप में देखना चाहते थे।

नेशनल इंडियन आर्मी

साल 1939 में जब सेकेंड वर्ल्ड वार चल रहा था तो नेता जी ने वहां अपना रुख किया। नेता जी पूरी दुनिया से मदद चाहते थे। जिससे कि अंग्रेज दबाव में आकर भारत को छोड़ दें। इस बात का उन्हें बहुत अच्छा असर देखने को मिला। लेकिन तब ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल में डाल दिया। करीब 2 सप्ताह तक नेता जी ने जेल में ना तो कुछ खाया और ना पिया। उनकी हालत बिगड़ती देख देश के नौजवान उग्र होने लगे। जिसके बाद सरकार ने उन्हें कलकत्ता में नजरबंद करते रखा। साल 1941 में बोस अपनी भतीजे की मदद से कलकत्ता से भाग निकले। इस दौरान वह सबसे पहले बिहार गए और फिर वहां से पाकिस्तान के पेशावर पहुंचे। फिर सोवियत संघ होते हुए सुभाष चंद्र बोस जर्मनी पहुंचे और वहां के शासक एडोल्फ हिटलर से मुलाकात की। साल 1943 में सुभाष चंद्र बोस जर्मनी छोड़

जापान जा पहुंचे। यहां पर वह मोहन सिंह से मिले। मोहन सिंह उस दौरान आजाद हिंद फौज के मुख्य थे। जिसके के बाद बोस ने मोहन सिंह और रास बिहारी के साथ मिलकर आजाद हिंद फौज का पुनर्गठन किया। इसके साथ ही उन्होंने आजाद हिंद फौज सरकार नामक पार्टी बनाई। साल 1944 में नेता जी ने अपनी आजाद हिन्द फ़ौज को तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा का नारा दिया। उनके इस नारे मे देश भर में एक नई क्रांति को जन्म दिया। साल 1950 तक यह खबरे सामने आने लगीं कि नेता जी तपस्वी बन गए हैं। लेकिन 1960 में इतिहासकार लियोनार्ड ए. गॉर्डन ने इसे अफवाह बताया। कुछ रिपोर्ट के अनुसार, जब मित्सुबिशी के-21 बमवर्षक विमान, जिस पर वे सवार थे, वह 18 अगस्त 1945 को क्रैश हो गया। हालांकि इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं है कि बोस की मृत्यु कब हुई थी। क्योंकि उनकी बॉडी नहीं मिली थी, जिसके कुछ समय बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया गया था।

सियासत के सफर में एक अलग शख्सियत थे पूर्व पीएम अटल बिहारी बाजपेयी

भारत के पूर्व प्रधानमंत्रियों में पं. जवाहर लाल नेहरू के बाद अगर किसी ने लोकप्रियता का शिखर छुआ है, तो वह नाम अटल बिहारी वाजपेयी का है। राजनीति में वाजपेयी जी के नाम कई अटूट रिकॉर्ड हैं। बता दें कि पं. नेहरू के बाद अटल बिहारी वाजपेयी पहले ऐसे प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने लगातार दूसरी बार इस पद को प्राप्त किया था। विरोधी पार्टी के नेता भी वाजपेयी जी का लोहा मानते थे। आज ही के दिन यानी की 16 अगस्त को अटल बिहारी वाजपेयी का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया था। आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

मध्य प्रदेश के ग्वालियर के में 25 दिसंबर 1924 को अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म हुआ था। उनके पिता का नाम कृष्ण बिहारी वाजपेयी था और वह स्कूल में टीचर थे। वाजपेयी जी ने शुरूआती शिक्षा ग्वालियर के सरस्वती शिशु मंदिर से पूरी की। इसके बाद ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी ग्रेजुएशन किया। इसके बाद कानपुर के डीएवी कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एमए की डिग्री हासिल की।

पत्रकारिता के बाद राजनीति में एंट्री

अटल जी ने अपने छात्र जीवन से ही राजनीतिक विषयों पर वाद विवाद प्रतियोगिताओं हिस्सा लेना शुरू कर दिया था। साल 1939 में वह स्वयंसेवक की भूमिका में आ गए। इस दौरान उन्होंने हिंदू न्यूज पेपर में बतौर संपादक काम किया। वहीं श्यामा प्रसाद मुखर्जी से मुलाकात के बाद साल 1942 में वाजपेयी जी ने अपने राजनैतिक सफर की शुरूआत की। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आग्रह पर अटल जी ने भारतीय जनसंघ की सदस्यता ली।

अटल ने नेहरू को किया प्रभावित

साल 1957 में वाजपेयी जी ने उत्तर प्रदेश जिले के बलरामपुर लोकसभा सीट से पहला लोकसभा चुनाव लड़ा। इस चुनाव में उन्होंने जीत हासिल की। जिसके बाद साल 1957 से 1977 तक वह जनसंघ संसदीय दल के नेता के रूप में काम करते रहे। इसके बाद साल 1968 से 1973 तक वह भारतीय जनसंघ पार्टी के अध्यक्ष भी रहे। देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू को अटल जी ने अपने ओजस्वी भाषणों से प्रभावित किया था। वह अपनी भाषा शैली से सभी पर अपना प्रभाव छोड़ने में सफल हो जाते थे।

विदेश मंत्री बन बढ़ाया भारत का मान

अटल जी अपने विनम्र और मिलनसार व्यक्तित्व के कारण जाने जाते थे। इसी कारण विपक्ष से भी उनके मधुर संबंध थे। साल 1975 में जब तत्कालीन

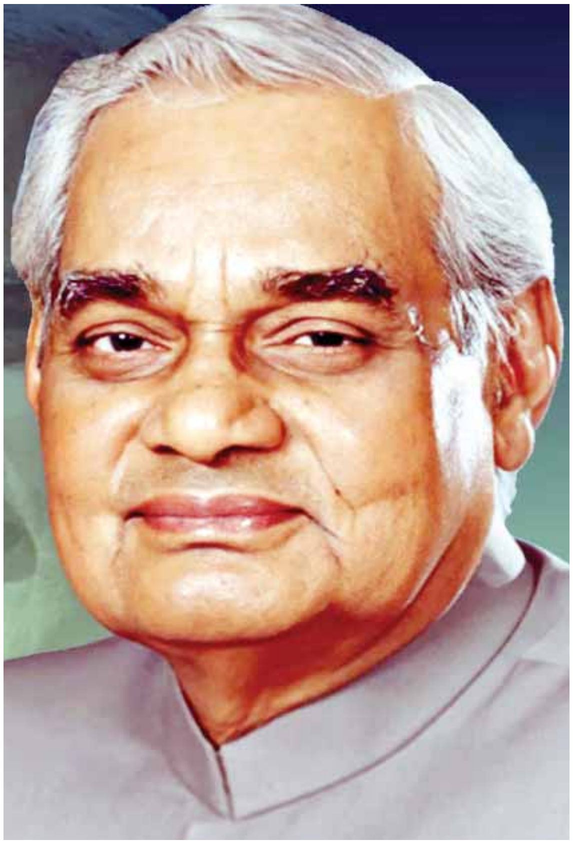

प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की तो वाजपेयी जी ने इसका पुरजोर तरीके से विरोध किया। जब साल 1977 में पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनीं। तो मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार में वाजपेयी जी को विदेश मंत्री का पद मिला। इस दौरान उन्होंने पूरे विश्व में भारत की शानदार छवि निर्मित करने का काम किया। बता दें कि संयुक्त राष्ट्र में अटल जी ने विदेश मंत्री के तौर पर हिंदी में भाषण दिया था। ऐसा करने वाले वह देश के पहले वक्ता थे।

प्रभावी थी विदेश नीति

अटल बिहारी वाजपेयी ने कई बार यह साबित किया कि वह विदेश नीति में माहिर होने के साथ ही प्रभावी राजनीतिज्ञ भी हैं। आपातकाल के दौरान भी वाजपेयी जी ने देश की छवि को सुधारने का काम किया था। साल 1980 में अटल जी ने अपने सहयोगी नेताओं की मदद से भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। अटल जी भाजपा के पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष भी बनें। वर्तमान में बीजेपी यानी की भारतीय जनता पार्टी देश की सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।

13 महीने की सरकार

बता दें कि 80 के दशक के आखिरी और 90 के दशक के शुरूआत में जब राम मंदिर के मुद्दे को लेकर वाजपेयी जी की पार्टी की छवि कट्टर हिंदूवादी के तौर पर बन रही थी। तब वाजपेयी जी ने पार्टी पर कट्टरपंथ का लगा टैग हटाने का प्रयास किया था। विरोधियों को उनकी पार्टी की नाकारत्मक छवि बनाने का प्रयासों को वह हमेशा अपने तार्किक बयानों से विफल कर देते थे। साल 1996 में जब वाजपेयी जी की 13 दिन की सरकार बनी थी। तब अटल जी के भाषणों ने लोगों के मन में पार्टी के प्रति सम्मान जगाने का काम किया था। राजनीति जगत में साल 1999 काफी चौंकाने वाला था। यह वह साल था जब जब अटल बिहारी वाजपेयी की 13 महीने की सरकार गिर गई थी। लेकिन 13 महीने में भी अटल सरकार के काम बोलने लगे थे।

अटल सरकार में हुआ परमाणु परीक्षण

साल 1998 में परमाणु परीक्षण के बाद बिगड़ी छवि के बाद भी अटल जी ने अपना कौशल पूरी दुनिया को दिखाया था। उन्होंने पाकिस्तान से बातचीत की पहल कर दुनिया को यह संदेश दिया था कि शांति के लिए भारत कितना अधिक गंभीर है। वहीं कारगिल युद्ध में भी अटल जी अपनी विदेश नीति के कारण दुनिया को यह समझाने में सफल हुए कि भारत पाकिस्तान के साथ युद्ध नहीं कर रहा है। बल्कि भारत पाकिस्तान की घुसपैठ और उसके नापाक मंसूबों को नाकाम करने का प्रयास कर रहा है। यही वह समय था जब वैश्विक स्तर पाकिस्तान अकेला पड़ गया और हार का सामना करना पड़ा।

राजीव गांधी की उपलब्धियों पर देश आज भी करता है गर्व

21वीं सदी के थे भारत निर्माता

20 अगस्त को देश के सबसे बड़े सियासी घराने ताल्लुक रखने वाले पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी का जन्मदिन है। राजीव गांधी देश के सबसे युवा प्रधानमंत्री थे। हालांकि वह कभी भी राजनीति में नहीं आना चाहते थे। लेकिन साल 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद वह प्रधानमंत्री बने। राजीव ने अपने कार्यों से देश की जनता पर अपनी अमिट छाप छोड़ने का काम किया था। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कई ऐसे सराहनीय काम किए थे। जिसके लिए उन्हें आज भी देशवासी याद करते हैं। आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर राजीव गांधी के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और शिक्षा

मुंबई में 20 अगस्त 1944 को राजीव गांधी का जन्म हुआ था। जब देश को अंग्रेजों से आजादी मिली, तो उस दौरान राजीव गांधी की उम्र तीन साल थी। देश के आजाद होने के बाद राजीव के नाना यानी की पं. नेहरु पहले प्रधानमंत्री बने। तीन मूर्ति भवन में राजीव गांधी का बचपन बीता। पहले वह पढ़ाई के लिए देहरादून के वेल्हम स्कूल गए। लेकिन जल्द ही उन्हें हिमालय की तलहटी में स्थित आवासीय दून स्कूल भेज दिया गया। इसके बाद आगे की पढ़ाई के लिए वह कैम्ब्रिज के ट्रिनिटी कॉलेज गए। लेकिन जल्द ही उन्होंने उस कॉलेज को भी अलविदा कह दिया और लंदन के इम्पीरियल कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की।

कैम्ब्रिज में पढ़ाई के दौरान उनकी मुलाकात सोनिया से हुई। सोनिया गांधी मूल रूप से इतावली की स्टूडेंट थी और कैम्ब्रिज में अंग्रेजी की पढ़ाई कर रही थीं। इसी दौरान दोनों की दोस्ती हो गई और जल्द ही दोस्ती प्यार में बदल गई। इसके बाद साल 1968 में राजीव और सोनिया ने शादी कर ली। दोनों के दो बच्चे प्रियंका और राहुल गांधी हैं।

बता दें कि राजीव गांधी कभी भी राजनीति में नहीं आना चाहते थे। वह शुरूआत से पायलट बनना चाहते थे। लेकिन जब संजय गांधी की साल 1980 में विमान दुर्घटना में मृत्यु हुई तो अचानक से उनके लिए भी परिस्थियां बदल गई। उनको संजय गांधी की मृत्यु से खाली हुए उत्तर प्रदेश के अमेठी संसदीय क्षेत्र उपचुनाव में उतारा गया। इस सीट से राजीव गांधी ने जीत हासिल की और वह संसद पहुंचे। इसके बाद जब साल 1984 को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या हुई। तब कुछ घंटो बाद ही राजीव को प्रधानमंत्री की शपथ दिलाई गई। इंदिरा गांधी की हत्या के महज 2 महीने बाद लोकसभा चुनाव हुए और इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने शानदार जीत हासिल की। इस दौरान राजीव गांधी ने कई सराहनीय काम किए। बता दें कि राजीव गांधी को 21वीं सदी का भारत निर्माता भी कहा जाता है।

पहले भारत देश में मतदान की आयु सीमा 21 साल थी। लेकिन यह आयु सीमा देश के तत्कालीन युवा प्रधानमंत्री राजीव गांधी की नजर में गलत थी। इसलिए उन्होंने युवाओं को 18 वर्ष की उम्र के मताधिकार देकर उन्हें देश के प्रति और जिम्मेदार व सशक्त बनाने की पहल की। इस तरह से करोड़ों युवा जो 18 वर्ष के थे, वह अपनी पसंद के सांसद, विधायक और अन्य निकाय चुनावों के लिए जनप्रतिनिधियों को चुन सकते थे। राजीव गांधी का सोचना था कि देश में विज्ञान और तकनीक की मदद के बिना उद्योगों का विकास संभव नहीं है। भारत में कंप्यूटर क्रांति लाने का श्रेय राजीव गांधी को दिया जाता है। उन्होंने न सिर्फ भारत के घरों पर कंप्यूटर पहुंचाने का काम किया, बल्कि देश में इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी को आगे ले जाने में अहम भूमिका निभाई। उनके प्रयास से आम लोगों तक कंप्यूटर पहुंच गया। बता दें कि उस दौरान में कंप्यूटर लाना आसान काम नहीं था। इसके अलावा उन्होंने कंप्यूटर उपकरणों पर आयात शुल्क घटाने की भी पहल की। जिससे कि आम जन तक इसकी पहुंच आसान हो सके। इसके अलावा साल 1986 में राजीव गांधी की सरकार में राष्ट्रीय शिक्षा नीति यानी कि ह्क्क्ष की घोषणा की गई। इस योजना के तहत पूरे देश में उच्च शिक्षा व्यवस्था का आधुनिकीकरण और विस्तार किया गया। इस तरह से राजीव गांधी ने अन्य कई ऐसे लोकहित में कार्य किए, जिससे देश तरक्की के मार्ग पर चलने के लिए प्रशस्त हो सके। साल 1984 से 1989 तक राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री रहे। वहीं चुनावी रैली को संबोधित करने के लिए वह 21 मई 1991 की रात तमिलनाडु पहुंचे। तभी मंच की तरफ आती हुए एक महिला ने उन्हें माला पहनाने का प्रयास किया। जैसे ही उस आत्मघाती महिला ने राजीव गांधी को माला पहनाया और उनके पैर छूने के लिए झुकी तो उसने अपनी कमर में बंधे बम का बटन दबा दिया। इस तेज धमाके में उस महिला और राजीव गांधी की दर्दनाक मौत हो गई।

आज भी लाखों दिलों पर राज करते हैं किशोर दा

बेहतरीन गानों की बात हो या शानदार अभिनय की, इन दोनों ही मामलों में सिंगर किशोर कुमार का कोई तोड़ नहीं था। भले ही वह इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन उनके द्वारा गाए गए गानों से वह आज भी लाखों दिलों पर राज करते हैं। बता दें कि आज ही के दिन यानी की 4 अगस्त को किशोर कुमार का जन्म हुआ था। ब्रिटिश इंडिया के खंडवा सेंट्रल प्रोविंस, जो अब मध्य प्रदेश का हिस्सा है। 4 अगस्त 1929 को किशोर कुमार का जन्म हुआ था। बता दें कि उनका असली नाम आभास कुमार गांगुली था। लेकिन फिल्मी दुनिया में कदम रखने के दौरान उन्होंने अपना नाम किशोर कुमार रख लिया था। बता दें कि अपने जमाने के कई सदाबहार गीत गाने वाले किशोर कुमार सिनेमा की दुनिया में नहीं आना चाहते थे। लेकिन सदाबहार अभिनेता अशोक कुमार, जो रिश्ते में किशोर कुमार के सगे भाई थे। वह चाहते थे कि उनकी तरह किशोर कुमार भी एक्टिंग की दुनिया में अपने पैर जमाएं। लेकिन किशोर कुमार एक्टिंग के लिए गंभीर नहीं थे। इसी वजह से उन्होंने अपने कॅरियर की शुरूआत बतौर सिंगर की। उन्होंने सबसे पहले फिल्म बॉम्बे टॉकीज के लिए गाना गाया था। इसके अलावा अलावा साल 1946 में किशोर कुमार ने फिल्म शिकारी से अपने एक्टिंग कॅरियर की शुरूआत की थी। इस फिल्म में किशोर कुमार के भाई और अभिनेता अशोक कुमार ने लीड रोल किया था। आपको जानकर हैरानी होगी कि किशोर कुमार ने अपने पूरे सिंगिग कॅरियर में कोई भी गाना फ्री में नहीं गाया। उनकी आवाज का जादू न सिर्फ लोगों बल्कि इंडस्ट्री में भी इस कदर कायम था कि वह गाना गाने से पहले ही एडवांस ले लेते थे। हालांकि अपने जमाने के अभिनेता राजेश खन्ना और डैनी डेंजोंगपा की फिल्मों का गाना गाने के दौरान किशोर कुमार इस नियम का पालन नहीं करते थे।

किशोर कुमार ने अपने पूरे कॅरियर में करीब 16 हजार गाने गाए हैं। इस दौरान उनको 8 बार फिल्म फेयर अवॉर्ड से नवाजा गया। साल 1970 से 1987 के बीच वह सबसे महंगे सिंगर के तौर पर जाने जाते थे। बता दें कि उन्होंने

अमिताभ बच्चन, राजेश खन्ना, जीतेन्द्र जैसे बड़े-बड़े दिग्गज कलाकारों को आवाज दी थी। बॉलीवुड अभिनेता अमिताभ बच्चन के लिए किशोर कुमार ने 131 गाने गाए थे। जिसमें से 115 गाने सुपरहिट साबित हुए। लेकिन साल 1980 के बाद यह जोड़ी टूट गई। इस जोड़ी के टूटने के पीछे का कारण यह था कि किशोर कुमार ने अमिताभ बच्चन से उनकी फिल्म ममता की छांव में गेस्ट अपीयरेंस के लिए कहा था।

लेकिन अमिताभ ने ऐसा करने से मना कर दिया। जिसकी वजह से किशोर कुमार नाराज हो गए और फिर उन्होंने दोबारा कभी अमिताभ बच्चन के लिए गाना नहीं गाया। किशोर कुमार की लव लाइफ किसी फिल्मी कहानी की तरह थी। उन्होंने ने चार शादियां की थीं। सबसे पहले उन्होंने रुमा देवी से शादी की थी। लेकिन अनबन के कारण यह रिश्ता ज्यादा समय तक नहीं चल सका। इसके बाद उन्होंने दूसरी शादी इंडस्ट्री की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस मधुबाला से की। मधुबाला से शादी के लिए किशोर कुमार ने अपना धर्म बदल लिया था। इस दौरान उन्होंने अपना नाम %अब्दुल करीम% रखा था। लेकिन शादी के कुछ सालों बाद मधुबाला की मौत हो जाने पर किशोर दा ने साल 1976 में अभिनेत्री योगिता बाली से तीसरी शादी की। हालांकि यह शादी भी ज्यादा दिनों तक न चल सकी। दो साल के अंदर ही किशोर कुमार और योगिता बाली ने तलाक ले लिया। इसके बाद साल 1980 में किशोर दा ने खुद से 21 साल छोटी लीना चंद्रावरकर से शादी की। इंडस्ट्री को तमाम सुपरहिट गाने देने वाले किशोर कुमार ने 18 अक्टूबर 1987 को सदा के लिए इस दुनिया को अलविदा कह दिया था। किशोर दा को दिल का दौरा पड़ने से उनकी मौत हो गई थी। जिसके बाद उन्हें उनकी मातृभूमि खंडवा में ही दफना दिया गया।

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस

नयी विश्व संरचना में युवकों की भागीदारी हो

मूल प्रश्न है कि क्या हमारे आज के नौजवान भारत को एक सक्षम देश बनाने का स्वप्न देखते हैं? या कि हमारी वर्तमान युवा पीढ़ी केवल उपभोक्तावादी संस्कृति से जन्मी आत्मकेन्द्रित पीढ़ी है? दोनों में से सच क्या है? दरअसल हमारी युवा पीढ़ी महज स्वप्नजीवी पीढ़ी नहीं है, वह रोज यथार्थ से जूझती है, उसके सामने भ्रष्टाचार, आरक्षण का बिगड़ता स्वरूप, महंगी होती जाती शिक्षा, कैरियर की चुनौती और उनकी नैसर्गिक प्रतिभा को कुचलने की राजनीति विसंगतियां जैसी तमाम विषमताओं और अवरोधों की ढेरों समस्याएं भी हैं। उनके पास कोरे स्वप्न ही नहीं, बल्कि आंखों में किरकिराता सच भी है। इन जटिल स्थितियों से लोहा लेने की ताकत युवक में ही हैं। क्योंकि युवक शब्द क्रांति का प्रतीक है।

युवा किसी भी देश का वर्तमान और भविष्य हैं। वो देश की नींव हैं, जिस पर देश की प्रगति और विकास निर्भर करता है। लेकिन आज भी बहुत से ऐसे विकसित और विकासशील राष्ट्र हैं, जहाँ नौजवान ऊर्जा व्यर्थ हो रही है। दुनिया में युवा शक्ति को रचनात्मक एवं सृजनात्मक दिशाओं में नियोजित करके ही नयी विश्व-संरचना बना सकते हैं, क्योंकि युवा क्रांति का प्रतीक है, ऊर्जा का स्रोत है, इस क्रांति एवं ऊर्जा का समुचित उपयोग हो, इसी ध्येय से सारी दुनिया प्रतिवर्ष 12 अगस्त को अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस मनाती है। सन् 2000 में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन आरम्भ किया गया था। यह दिवस मनाने का मतलब है कि युवाशक्ति का उपयोग विध्वंस में न होकर निर्माण में हो। पूरी दुनिया की सरकारें युवा के मुद्दों और उनकी बातों पर ध्यान आकर्षित करे। न केवल सरकारें बल्कि आम-जनजीवन में भी युवकों की स्थिति, उनके सपने, उनका जीवन लक्ष्य आदि पर चर्चाएं हो। युवाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तर पर भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इन्हीं मूलभूत बातों को लेकर यह दिवस मनाया जाता है।

युवा दिवस मनाने का मतलब है-एक दिन युवकों के नाम। इस दिन पूरे विश्व में युवापीढ़ी के संदर्भ में चर्चा होगी, उसके ह्रास और विकास पर चिंतन होगा, उसकी

समस्याओं पर विचार होगा और ऐसे रास्ते खोजे जायेंगे, जो इस पीढ़ी को एक सुंदर भविष्य दे सकें। इसका सबसे पहला लाभ तो यही है कि संसार भर में एक वातावरण बन रहा है युवापीढ़ी को अधिक सक्षम और तेजस्वी बनाने के लिए। युवकों से संबंधित संस्थाओं को सचेत और सावधान करना होगा और कोई ऐसा सकारात्मक कार्यक्रम हाथ में लेना होगा, जिसमें निर्माण की प्रक्रिया अपनी गति से चलती रहे। विशेषतः राजनीति में युवकों की सकारात्मक एवं सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करना होगा।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत के नवनिर्माण के लिये मात्र सौ युवकों की अपेक्षा की थी। क्योंकि वे जानते थे कि युवा 'विजनरी' होते हैं और उनका विजन दूरगामी एवं बुनियादी होता है। उनमें नव निर्माण करने की क्षमता होती है। नया भारत निर्मित करते हुए नरेन्द्र मोदी को भी युवाशक्ति को आगे लाना होगा। वर्तमान में कई देशों में शिक्षा के लिए जरूरी आधारभूत संरचना की कमी है तो कहीं प्रछन्न बेरोजगारी जैसे हालात हैं। इन स्थितियों के बावजूद युवाओं को एक उन्नत एवं आदर्श जीवन की ओर अग्रसर करना वर्तमान की सबसे बड़ी जरूरत है। युवा सपनों को आकार देने का अर्थ है सम्पूर्ण मानव जाति के उन्नत भविष्य का निर्माण।

पर्वतारोही

बनने के लिए फौलादी जिगर-जज्बा जरूरी

बछेंद्री पाल का नाम जुबान पर आते ही आंखों के सामने पर्वतों की उंची पहाड़ी दिखने लगती हैं। वह माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला हैं। पर्वतारोहण खेल नहीं, जज्बा है जिसमें टीम वर्क, फ्लेक्सीबिलिटी, दृढ़ता और मजबूत इरादे का संगम होता है। इसके लिए कठिन परिश्रम रूपी घोर तपस्या करनी होगी। पर्वतारोहण सभी को अपनी तरफ आकर्षित करता है। पर, है बेहद कठिन और चुनौतीपूर्ण? एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पर्वतारोही खिलाड़ियों की संख्या अब गुजरे समय के मुकाबले अच्छी-खासी है। उसकी वजह ये है कि पर्वत पर जाने वाले खिलाड़ियों के लिए राज्य सरकारें अब हर संभव सहयोग करती हैं। बकायदा टेनिंग दी जाती हैं, प्रशिक्षण का प्रावधान है जिसमें शारीरिक-मानसिक रूप से खिलाड़ियों को मजबूत किया जाता है। जबकि, एक वक्त था जब इस ओर हुकूमतों का ध्यान ज्यादा नहीं हुआ करता था। लेकिन हाल के वर्षों में इस क्षेत्र के चलत हिंदुस्तान की विश्व पटल पर हमारे पर्वतारोहियों ने खूब चर्चाएं करवाई। भारत में कई पर्वतारोही खिलाड़ियों ने अपने असाधारण कारनामे से देश का नाम रौशन किया। वैसे, ये तल्ख सच्चाई है अपने कदमों से गगनचुंबी पर्वतों को नापना अब भी सबके बस की बात नहीं? क्योंकि इस खेल में पर्वतारोही खुद की जान-हानि की जिम्मेदारी लेकर जोखिम में डालता है। खुदा न खास्ता कुछ भी हुआ, उसकी जिम्मेदारी स्वयं की होगी।

पर्वत पर चहलकदमी करने की पहली शर्त होती है तन और मन दोनों को पत्थर जैसा बनाना। क्योंकि इस खेल में डर के आगे ही जीत होती है। आज राष्ट्रीय पर्वतारोहण दिवस है जो इन बातों का बुनियादी रूप से ऐसे खिलाड़ियों को एहसास करवाता है, जो इस खेल में भाग लेने की सोचते हैं। इसके अलावा आज

का दिन मुकम्मल रूप से पर्वतारोहण के समक्ष आने वाली प्रत्येक चुनौतियों से भी वाकिफ कराता है। पहाड़ चढ़ने के वक्त पर्वतारोहीयों की सबसे ज्यादा दुर्घटनाएं हाइपोथर्मिया के चलते होती हैं। कारण होता है जब उनके शरीर का तापमान तेजी से गिरने लगता है जो 35 डिग्री या इससे कम हो जाता है तो उसे हाइपोथर्मिया कहते हैं ऐसे में खिलाड़ियों की सोचने और पर्वत पर चढ़ने की क्षमता कम हो जाती है। पर्वतारोहण के दौरान ट्रेनिंग में कमी होना भी जानलेवा साबित होती है। कई बार अनुभवी प्रशिक्षक भी पर्वतारोहण के दौरान ओवरकॉन्फिडेंस में मौसम के मिजाज को नहीं समझ पाते या फिर ऐसे संभावित खतरों को हल्के में लेते हैं जो बिन बुलाए हादसों का कारण बन जाते हैं। किसी भी पर्वत को चढ़ने से पहले एक पर्वतारोही के लिए सरकारी गाइडलाइन्स का फॉलो करना जरूरी होता है। क्योंकि अब सरकार की ओर कई सुविधाएं और मुआवजे का प्रावधान है।

पर्वतारोहण क्षेत्र के इतिहास पर नजर डालें तो पहली अगस्त को राष्ट्रीय पर्वतारोहण दिवस मनाया जाता है जिसका श्रीगणेश 2015 में बॉबी मैथ्यूज और उनके दोस्त जोश मैडिगन को संमानित करने के बाद हुआ। दोनां ने न्यूयॉर्क में एडिरोंडैक पर्वत की तकरीबन सभी 46 चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ाई करके कभी ना टूटने वाला कीर्तिमान स्थापित किया है। दोनों संयुक्त रूप से अगस्त की पहली तारीख को अंतिम चोटी, व्हाइटफेस माउंटेन पर पहुंचे थे। इसलिए ये दिवस पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों के संरक्षण और संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए भी खास माना जाता है।

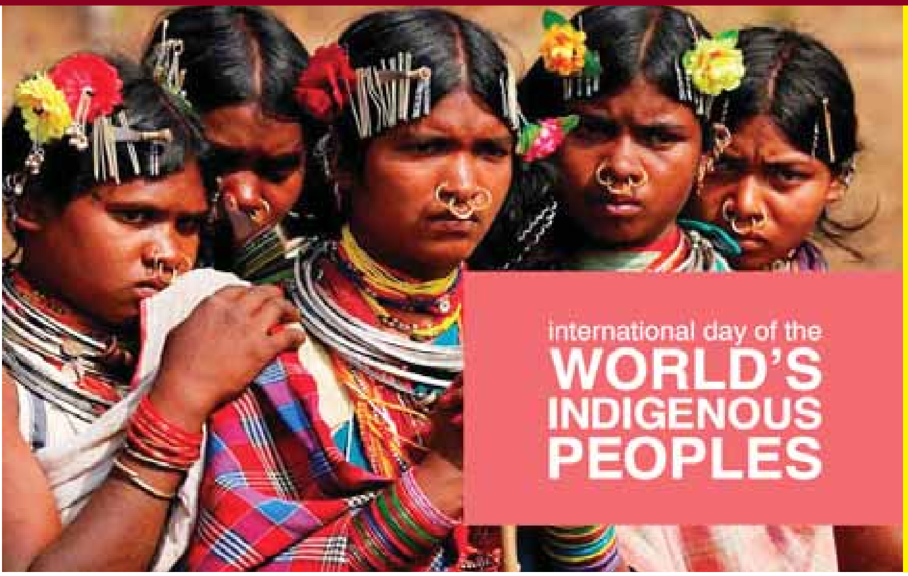

आदिवासी के अस्तित्व एवं अस्मिता की रक्षा हो

अन्तरराष्ट्रीय आदिवासी दिवस, विश्व में रहने आदिवासी लोगों के मूलभूत अधिकारों जल, जंगल, जमीन को बढ़ावा देने और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और न्यायिक सुरक्षा के लिए प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को मनाया जाता है। इस वर्ष विश्व में शांति कायम हो की थीम पर यह दिवस मनाया जायेगा। यह दिवस उन उपलब्धियों और योगदानों को भी स्वीकार करता है जो वनवासी लोग पर्यावरण संरक्षण, आजादी, महा आंदोलनों, जैसे विश्व के मुद्दों को बेहतर बनाने के लिए करते हैं। यह पहली बार संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा दिसंबर 1994 में घोषित किया गया था। ग्रह पर कुल मानव आबादी का लगभग 47 करोड़ हिस्सा आदिवासी लोगों का है। इसके अलावा, दुनिया में 100 से अधिक गैर-संपर्क जनजातियाँ हैं। दुनिया में बोली जाने वाली 7000 भाषाओं में से 4000 भाषाएँ आदिवासी लोगों द्वारा बोली जाती हैं। आदिवासी लोग प्रकृति की पूजा करते हैं, प्रकृति में जीते है, जल, जंगल एवं जमीन से जुड़े इन लोगों ने प्रकृति एवं पर्यावरण को संरक्षित कर रखा है।

आदिवासी महिलाएं आदिवासी समुदाय की रीढ़ है, वे पारंपरिक पैतृक ज्ञान के संरक्षण और प्रसारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल और वैज्ञानिक ज्ञान के रखवाले के रूप में उनकी एक अभिन्न सामूहिक और सामुदायिक भूमिका है। दुनिया भर में रहने वाले 47 करोड़ आदिवासी और जनजाति समुदायों के सामने जंगलों का कटना और उनकी पारंपरिक जमीन की चोरी सबसे बड़ी चुनौती है। वे धरती पर जैव विविधता वाले 80 प्रतिशत इलाके के संरक्षक हैं लेकिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लोभ, हथियारबंद विवाद और पर्यावरण संरक्षण संस्थानों की वजह से बहुत से समुदायों की आजीविका एवं अस्तित्व खतरे में हैं, ग्लोबल वॉर्मिंग का असर हालात को और खराब कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार आदिवासी जनजातियां 90 देशों में फैली हैं, 5,000 अलग अलग संस्कृतियां और 4,000 विभिन्न भाषाएं, इस बहुलता के बावजूद उन्होंने अनेक संघर्ष झेले हैं और आज भी दुनिया में आदिवासी समुदाय खतरे में हैं। भारत सहित दुनिया की आदिवासी महिलाएं हिंसा, यौन शोषण एवं अपराध की शिकार है। मणिपुर में 19 जुलाई, 2023 को दो आदिवासी महिलाओं को निर्वस्त्र कर गांव में घुमाने एवं पश्चिम बंगाल के मालदा में भीड़ ने दो

आदिवासी महिलाओं की पिटाई की, फिर उन्हें अर्धनग्न कर दिया गया। आदिवासी महिलाओं के साथ होने वाली ऐसी घटनाएं देश-विदेश के सभ्य समाजों को झकझोर दिया है।

इस वर्ष का 'विश्व आदिवासी दिवस' भारत के लिये विशेष महत्वपूर्ण है। क्योंकि भारत की नई राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू वनवासी समुदाय से जुड़ी होने के साथ-साथ एक महिला है, उन्होंने प्रकृति एवं पर्यावरण के संकटों को करीब से देखा है, यह भारत की विकराल होती समस्या है, जिसका गहराना जीवन को अंधेरा में धकेलना है, अतः वे इस समस्या के दर्द को गहराई से महसूस करती है, तभी उन्होंने कहा कि मेरा तो जन्म उस जनजातीय परंपरा में हुआ है जिसने हजारों वर्षों से प्रकृति के साथ तालमेल बनाकर जीवन को आगे बढ़ाया है। मैंने जंगल और जलाशयों के महत्व को अपने जीवन में महसूस किया है। हम प्रकृति से जरूरी संसाधन लेते हैं और उतनी ही श्रद्धा से प्रकृति की सेवा भी करते हैं। जल, जंगल और जमीन इन तीन तत्वों से पृथ्वी और प्रकृति का निर्माण होता है। यदि यह तत्व न हों तो पृथ्वी और प्रकृति इन तीन तत्वों के बिना अधूरी है। विश्व में ज्यादातर समृद्ध देश वही माने जाते हैं जहां इन तीनों तत्वों का बाहुल्य है। भारत भी इसी समृद्धता का देश है, लेकिन इनकी समृद्धता की उपेक्षा के कारण अनेक समस्याएं विकास की बड़ी बाधा बनती जा रही है। संभव है कि द्रौपदी मुर्मू के नेतृत्व में प्रकृति एवं पर्यावरण की समस्या के साथ-साथ आदिवासी महिलाओं से जुड़ी समस्याओं का समाधान होगा। आदिवासियों में एक बड़ी समस्या धर्मपरिवर्तन की है। गुजरात के आदिवासी क्षेत्र में सुखी परिवार फाउण्डेशन का संचालन आदिवासी संत गणि राजेन्द्र विजयजी के नेतृत्व में वर्ष 2005 से करते हुए हम शिक्षा, सेवा, जनकल्याण की अनेक गतिविधियों को आकार दे रहे हैं, वहां मैंने आदिवासी समस्याओं को बहुत करीब से देखा हैं।

WORLD
HUMANITARIAN
DAY

मानवता को बल देना जरूरी

विश्व मानवीय दिवस प्रत्येक वर्ष 19 अगस्त को मनाया जाता है। मानव मूल्यों के छीजते दौर में इस दिवस की विशेष प्रासंगिकता एवं उपयोगिता है। इस दिवस पर उन लोगों को याद किया जाता है, जिन्होंने मानवीय उद्देश्यों के कारण दूसरों की सहायता के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी। इस दिवस को विश्वभर में मानवीय कार्यों एवं मूल्यों को प्रोत्साहन दिए जाने के अवसर के रूप में भी देखा जाता है। इसको मनाने का निर्णय संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा स्वीडिश प्रस्ताव के आधार पर किया गया। इसके अनुसार किसी आपातकाल की स्थिति में संयुक्त राष्ट्र देशों द्वारा आपस में सहायता के लिए मानवीय आधार पर पहल की जा सकती है। इस दिवस को विशेष रूप से 2003 में संयुक्त राष्ट्र के बगदाद, इराक स्थित मुख्यालय पर हुए हमले की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाना आरंभ किया गया था जो विश्व में मानवीय कार्यों एवं मानव-मूल्यों को प्रेरित करने वाली भावना का जश्न मनाने का भी एक अवसर है। इसका उद्देश्य उन लोगों की पहचान करना है जो दूसरों की मदद करने में विपरीत परिस्थितियों को सामना कर रहे हैं एवं मानवता की रक्षा के लिये प्रतिबद्ध है।

आज समूची दुनिया में मानवीय चेतना यानी मानवता के साथ खिलवाड़ करने वाली त्रासद एवं विडम्बनापूर्ण परिस्थितियां सर्वत्र परिव्याप्त हैं-जिनमें आतंकवाद सबसे प्रमुख है। जातिवाद, अस्पृश्यता, सांप्रदायिकता, महंगाई, गरीबी, भिखमंगी, विलासिता, अमीरी-गरीबी का बढ़ता फासला, अनुशासनहीनता, पदलिप्सा, महत्वाकांक्षा, उत्पीड़न और चरित्रहीनता आदि अनेक परिस्थितियों से मानवता पीड़ित एवं प्रभावित है। उक्त समस्याएं किसी युग में अलग-अलग समय में प्रभावशाली रहीं होंगी, इस युग में इनका आक्रमण समग्रता से हो रहा है। आक्रमण जब समग्रता से होता है तो उसका समाधान भी समग्रता से ही खोजना पड़ता है। हिंसक परिस्थितियां जिस समय प्रबल हों, अहिंसा का मूल्य स्वयं बढ़ जाता है। महात्मा गांधी ने कहा है कि आपको मानवता में विश्वास खोना नहीं चाहिए। मानवता एक महासागर है। यदि महासागर की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो भी महासागर गंदा नहीं होता है।' मानवतावाद को विकसित करने का मुख्य आधार धर्म है। इसीलिये आज विभिन्न धर्मों की मानवतावादी, बुद्धिवादी और जनवादी परिकल्पनाओं को नकारा नहीं जा सकता और इनके माध्यम से भेद भावों से भरी व्यवस्था पर जोरदार प्रहार किया जा सकता है। धार्मिक विचारधाराएं एवं संगठन आज भी दुःखी, पीड़ित एवं अशान्त मानवता को शान्ति प्रदान कर सकते हैं। ऊँच-नीच, भेदभाव, जातिवाद पर प्रहार करते हुए धर्म ही लोगों के मन में एकता का विकास कर रहा है। विश्व शान्ति एवं परस्पर भाईचारे का वातावरण निर्मित करके कला, साहित्य और संस्कृति के विकास के मार्ग को प्रशस्त करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

किसी भी युग में हो रहे नैतिक पतन को रोककर मानवीय चेतना के ऊर्ध्वारोहण के लिए अमानवतावादी दृष्टिकोण का निरसन आवश्यक होता है। सामाजिक मूल्य-परिवर्तन और मानदंडों की प्रस्थापना से लोकचेतना में परिष्कार हो सकता है। इसलिये ऑड्रे हेपबर्न ने कहा था कि जब तक दुनिया अस्तित्व में है, अन्याय और अत्याचार होते रहेंगे। जो लोग सक्षम और समर्थ हैं, उनकी जिम्मेदारी अधिक है कि वे लोग अपने से निर्बल लोगों को भी स्नेह दें।

हर साल, आपदाओं एवं मानव-भूलों से लाखों लोगों विशेषतः दुनिया के सबसे गरीब, सबसे हाशिए पर आ गये लोग और कमजोर व्यक्तियों को अपार दुःख का सामना करना पड़ता है। मानवतावादी सहायताकर्मी इन आपदा प्रभावित समुदायों एवं लोगों को राष्ट्रीयता, सामाजिक समूह, धर्म, लिंग, जाति या किसी अन्य कारक के आधार पर भेदभाव के बिना जीवन बचाने में सहायता और दीर्घकालिक पुनर्वास प्रदान करने का प्रयास करते हैं। वे सभी संस्कृतियों, विचारधाराओं और पृष्ठभूमि को प्रतिबिंबित करते हैं और मानवतावाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से वे एकजुट हो जाते हैं। इस तरह की मानवतावादी सहायता मानवता, निष्पक्षता, तटस्थता और स्वतंत्रता सहित कई संस्थापक सिद्धांतों पर आधारित है। मार्टिन लूथर किंग ने इसकी उपयोगिता को उजागर करते हुए कहा कि यह प्यार और स्नेह है, जो हमारी दुनिया और हमारी सभ्यता को बचाएगा।

GOONJ

फेस आइसिंग से सालों-साल जवां रहेगी त्वचा, हेल्दी और ग्लोइंग बनेगी स्किन

स्किन केयर और मेकअप ये दोनों चीजें हम सभी लगभग रोजाना करते हैं। इसके लिए बाजार में कई सारे प्रोडक्ट्स भी मिल जाते हैं। लेकिन इसके अलावा भी एक ऐसी चीज है, जिसके इस्तेमाल से आपकी त्वचा को अनगिनत लाभ होते हैं। बता दें कि आइसिंग करने से हमारी स्किन को लाभ मिलता है। आपने भी सुना होगा कि प्रोफेशनल मेकअप आर्टिस्ट अपने क्लाइंट का मेकअप करने से पहले स्किन पर आइसिंग का इस्तेमाल करते हैं। आज इस आर्टिकल में हम आपको बताने जा रहे हैं कि मेकअप से पहले आइसिंग करने से आपकी त्वचा को क्या-क्या लाभ मिलते हैं।

पोर्स के लिए

चेहरे की स्किन पर आइस का इस्तेमाल करने से नाक और आस-पास की जगहों पर मौजूद पोर्स का साइज छोटा हो जाता है। आइसिंग करने से आपको पोर्स को मिनीमाइज करने के लिए एक्स्ट्रा पोर प्राइमर या किसी अन्य चीज की जरूरत नहीं पड़ती है। आप अगर मेकअप या स्किन केयर से 30 मिनट पर फेस पर आइसिंग करती हैं, तो पोर्स का साइज छोटा हो जाता है। आप चाहें तो बर्फ को सीधे तौर पर लगा सकती हैं, या

फिर बर्फ को किसी कपड़े में लपेटकर भी फेस पर अप्लाई कर सकती हैं।

अंडरआई स्किन के लिए

चेहरे पर आइसिंग करने के कई लाभ होते हैं। हमारे फेस पर सबसे ज्यादा नाजुक त्वचा अंडरआई स्किन होती है। अंडरआई स्किन का ख्याल रखना बेहद जरूरी होता है। अंडरआई स्किन के लिए आपको मार्केट में कई तरह की क्रीम मिल जाएगी। लेकिन आंखों के नीचे मौजूद अंडरआई बैग यानी पफी आईज से राहत पाने के लिए आइसिंग का इस्तेमाल सबसे अच्छा होता है। अगर मेकअप से पहले आपकी आंखें सूज गई हैं और आप एकदम फ्रेश दिखना चाहती हैं, तो आप अंडरआई स्किन पर भी बर्फ लगा सकती हैं।

हेल्दी स्किन के लिए

हेल्दी और जवां दिखने के लिए आपकी स्किन में कसाव होना बहुत जरूरी होता है। इसके लिए आप अपने फेस पर आइसिंग कर सकती हैं। जैसा कि आपको पता होगा कि मेकअप प्रोडक्ट स्किन के लिए काफी ज्यादा हानिकारक होते हैं। ऐसे में मेकअप से पहले कुछ ऐसे टिप्स फॉलो करने चाहिए। जिससे आपकी स्किन हेल्दी और लंबे समय कर फेस एजिंग साइंस न दिखें। बता दें कि फेस पर आइसिंग करने से नेचुरली ग्लो आता है। फेस पर आइसिंग करने से मेकअप प्रोडक्ट का ज्यादा इस्तेमाल नहीं करना पड़ेगा।

Straightening के बाद बालों की इन तरीकों से करें देखभाल, ऐसे नहीं होगा हेयर डैमेज

हमारी खूबसूरती को बढ़ाने में सबसे अहम भूमिका बालों की होती है। लेकिन कई बार जाने-अनजाने में हम बालों को नुकसान पहुंचा देते हैं। कॉलेज जाना हो या ऑफिस हम सभी स्टाइलिश दिखने के लिए बालों को स्ट्रेट करते हैं। बहुत से लोगों के लिए बालों को स्ट्रेट करना आम बात होती है। लेकिन बता दें कि बाल स्ट्रेटनिंग से जुड़ी कई ऐसे महत्वपूर्ण बातें होती हैं, जिन्हें हम नजरअंदाज कर देते हैं। ऐसे में बाद में सिर्फ पछतावा रह जाता है। इसलिए बालों को स्ट्रेट करने से पहले हमें कुछ सावधानियां बरतनी चाहिए। जिससे बालों को नुकसान नहीं पहुंचेगा।

ऑइलिंग है जरूरी

बालों को मजबूती देने के लिए तेल सबसे ज्यादा जरूरी होता है। तेल हमारे बालों को नरिश करने के साथ ही जड़ों को भी मजबूत बनाने के काम करता है। आप चाहें तो हेयर स्ट्रेटनिंग से पहले बालों में थोड़ी सी ऑयलिंग कर सकती हैं। इससे आपके बाल एक्स्ट्रा हीट से बचे रहेंगे और उन्हें नुकसान भी नहीं पहुंचेगा। बालों पर ज्यादा तेल लगाने से यह चिपचिपे हो जाते हैं लेकिन

अगर सही मात्रा में आप बालों में तेल लगाती हैं, तो यह बालों को शाइन देने का काम करता है, साथ ही बालों की खूबसूरती को बढ़ाता है।

सीरम करें अप्लाई

जब भी हम अपने बालों को स्ट्रेट करें या कर्ल करते हैं, तो यह जरूर चाहते हैं कि बाल जले या अजीब से नजर न आएं। इसके लिए सबसे बढ़िया ऑप्शन सीरम होता है। आपके बालों को सिल्की और स्मूथ बनाने के लिए मार्केट में कई तरह के सीरम उपलब्ध होते हैं। हल्के गीले बालों पर सीरम अप्लाई करने से यह पूरा दिन सेट रहते हैं। बता दें कि सीरम फ्रिजी बालों को भी सेट रखता है और इससे बाल भी कम डैमेज होते हैं।

कंडीशनर का इस्तेमाल

अक्सर शैंपू के बाद हम सभी के बाल उलझे-उलझे नजर आते हैं और सूखने के बाद यह फ्रिजी हो जाते हैं। ऐसे में सबसे अच्छा तरीका है कि आप शैंपू करने के बाद बालों में कंडीशनर जरूर अप्लाई करें। कंडीशनर आपके बालों को प्रोटेक्टिंग लेयर ढकने का काम करता है, इससे आपके बाल स्मूथ हो जाते हैं। वहीं जब आप बालों को स्ट्रेट करते हैं, तो कंडीशनर आपके बालों को डैमेज होने से बचाता है। बता दें कि कंडीशनर आपके बालों को लंबे समय के लिए अच्छा बनाए रखता है।

हेयर प्रोटेक्टर है अच्छा ऑप्शन

ब्यूटी और फैशन इंडस्ट्री में सीरम की तरह कई सारे प्रोडक्ट्स आ गए हैं। जो आपके बालों की अच्छे से देखभाल करते हैं। उन्हीं में से एक प्रोडक्ट हेयर प्रोटेक्टर है। तेल या फिर स्प्रे और क्रीमी स्ट्रक्चर में यह मिलता है। एक तरह से यह आपके बालों के लिए कवच की तरह काम करता है।

चुकंदर के पानी से बाल होंगे शाइनी और मजबूत, दूर होगी खुजली और डैंड्रफ की समस्या

आजकल की बिजी लाइफस्टाइल के कारण बालों की देखभाल करना काफी मुश्किल भरा काम है। जिसके कारण बाल बेजान और सूखे होने लगते हैं। वहीं बदलते मौसम के कारण भी बालों से संबंधित समस्याएं बढ़ जाती है। बारिश के मौसम में बालों के झड़ने की समस्या ज्यादा होती है। इस दौरान स्कैल्प में ड्राईनेस, सिर में खुजली और डैंड्रफ जैसी समस्याएं हो सकती हैं। स्कैल्प में होने वाली खुजली से छुटकारा पाने के लिए लोग बाजार से कई तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन इसके बाद भी जीरो रिजल्ट मिलता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि इस दौरान घरेलू नुस्खे का भी इस्तेमाल काफी फायदेमंद होता है। जैसे कि चुकंदर का पानी स्कैल्प की खुजली को दूर करने में मददगार होती है। लेकिन इसके लिए चुकंदर के पानी का सही से इस्तेमाल किया जाना जरूरी होता है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको स्कैल्प की खुजली दूर करने के लिए चुकंदर के पानी के इस्तेमाल के तरीके के बारे में बताने जा रहे हैं।

चुकंदर का पानी

चुकंदर के पानी में एंटीऑक्सीडेंटस और विटामिन सी पाया जाता है। यह डैंड्रफ की समस्या को खत्म करने में मददगार होता है। इसके साथ ही चुकंदर के पानी में आयरन, पोटेशियम और इलेक्ट्रोलाइट्स भी पाया जाता है। यह स्कैल्प को गहराई से साफ करने के साथ ही बालों को मजबूती देने का काम करता है। इसके इस्तेमाल से बाल शाइनी होते हैं। अगर आप हफ्ते में दो बार चुकंदर का पानी इस्तेमाल करती हैं, तो यह बालों को प्राकृतिक रूप से मजबूत बनाता है।

कैसे करें अप्लाई

सबसे पहले दो चुकंदर से जूस तैयार कर लें। अब इसमें 1 चम्मच अदरक, 2 चम्मच ऑलिव ऑयल मिलाएं। इस पेस्ट को तैयार कर स्कैल्प पर मसाज करें। फिर करीब 15 मिनट बाद सिर को धो लें।

हेयर मास्क

अगर आप चाहें तो चुकंदर को हेयर मास्क में मिलाकर भी अप्लाई कर सकती हैं। इसके लिए आप 2 चम्मच चुकंदर का रस, 2 चम्मच दही और 2 चम्मच कॉफी पाउडर मिला लें। इन सभी चीजों का पेस्ट बनाकर इसे बालों की जड़ों से लेकर लेन्थ तक लगाएं। करीब 30 मिनट तक लगा रहने के बाद इसे धो डालें।

हेयर स्प्रे

चुकंदर का हेयर स्प्रे बनाने के लिए आप 3 चुकंदर को उबाल लें। फिर इसके पानी को ठंडा कर स्प्रे बोतल में भरकर स्टोर कर लें। अब इस पानी से अपने स्कैल्प पर मसाज करें। 20 मिनट तक लगाए रहने के बाद शैंपू से बालों को धो डालें।

गर्मियों में स्किन पर लगाएं तुलसी का टोनर, ग्लोइंग और यंग दिखेगी आपकी स्किन

गर्मियों में स्किन संबंधी तमाम ऐसी समस्याएं होती हैं, जो महिलाओं को परेशान करती हैं। जिसके लिए महिलाएं अलग पार्लर में जाती हैं, या फिर घर पर घरेलू नुस्खे ट्राई करती हैं। जिससे की तेज धूप और चिलचिलाती गर्मी से अपनी त्वचा का ध्यान रखा जा सकता है। बता दें कि ऐसा ही एक उपाय तुलसी टोनर है। वहीं लोगों के घरों में तुलसी का पौधा लगा भी होता है। तुलसी में कई ऐसे गुण पाए जाते हैं। जो आपकी त्वचा को बैक्टीरिया और जर्म से बचाने का काम करते हैं। तुलसी की पत्तियों की मदद से आप तुलसी टोनर बनाकर तैयार कर सकती हैं। इसके फायदेतुलसी में एंटीबैक्टीरियल और एंटी फंगल गुण के होने से मुंहासे और स्किन इंफेक्शन की समस्या दूर होती है। इसकी मदद से स्किन की एजिंग समस्या भी दूर होती है। गर्मियों में तुलसी टोनर अप्लाई करना काफी बेस्ट माना जाता है। क्योंकि इससे आपनी स्किन भी हाइड्रेट रहती हैं। वहीं इसमें मौजूद गुलाबजल और ग्लिसरीन आपके चेहरे की नमी को बरकरार रखता है। जिसके चलते आपकी स्किन ग्लोइंग बनती है।तुलसी का टोनर आपकी स्किन के लिए काफी फायदेमंद होता है। इसक लगाने से ग्लो बना रहता है। साथ ही गुलाब जल और ग्लिसरीन आपकी स्किन को टाइट रखने का काम करता है।इस टोनर के इस्तेमाल से आपकी स्किन में पीएच बैलेंस बना रहता है। स्किन के ढीले होने और झुर्रियों से भी निजात दिलाता है।

ऐसे बनाएं तुलसी टोनर

सबसे पहले पैन में एक गिलास पानी को उबाल लें। जब पानी अच्छे से उबल जाए तो उसमें तुलसी की पत्तियां डाल दें।अब पानी को ठंडा हो जाने दें।फिर उस पानी में गुलाबजब और ग्लिसरीन मिक्स कर दें। पानी को अच्छे से मिक्स कर एक बोतल में भर लें। इस तरह से आपका टोनर बनकर तैयार हो गया है।

फेस पर अप्लाई करने का तरीका

इसे अप्लाई करने से पहले फेस को अच्छे से साफ कर लें। इसके बाद फेस पर इस टोनर को स्प्रे करें।आप चाहें तो इसे कॉटन की मदद से भी अप्लाई कर सकती हैं।जब यह टोनर सूख जाए तो लोशन अप्लाई करें।

सामग्री

तुलसी की पत्तियां- 10-12, गुलाबजल- 2 चम्मच, ग्लिसरीन- 1 चम्मच

ज्वॉइंट पेन से हो चुके हैं परेशान तो अपनाएं ये घरेलू नुस्खा

आमतौर पर जोड़ों के दर्द को बुढ़ापे से जोड़कर देखा जाता था। आपने भी बुजुर्ग लोगों को कई बार कहते हुए सुना होगा कि उम्र बढ़ने के साथ ही उन्हें जोड़ों का दर्द परेशान करने लगा है। लेकिन वर्तमान समय में गलत खानपान और अनहेल्दी लाइफस्टाइल के कारण लोगों को कम उम्र में ही जोड़ों का दर्द परेशान करने लगा है। मुश्किल से 30 की उम्र पार करने के बाद से ही लोगों को जोड़ों का दर्द परेशान करने लगा है। जोड़ों के दर्द होने के पीछे फ्ल्यूड और कोलेजन का कम होना है। हालांकि अपनी डाइट में बदलाव कर ज्वॉइंट पेन की समस्या से राहत पाई जा सकती है। साथ ही इसके लिए एक्सरसाइज भी जरूरी मानी जाती है। ऐसे में अगर आप ज्वॉइंट के दर्द से परेशान हैं, तो यह आर्टिकल आपके लिए है। इस आर्टिकल के जरिए हम आपको एक ऐसे खास मिक्चर के बारे में बताने जा रहे हैं। जिसके इस्तेमाल से जोड़ों के दर्द को दूर करने में मदद मिल सकती है।

इन सभी चीजों के ग्राइंडर कर महीन पाउडर बना लें।फिर 1 चम्मच पाउडर को 1 गिलास पानी में मिलाएं।इसके बाद रोजाना दिन में एक बार इसका सेवन करें।

जोड़ों के दर्द से निजात पाने का घरेलू नुस्खा

मखाना शरीर में कैल्शियम लेवल को बढ़ाने में मदद करता है। इसके साथ ही आस्टियो आर्थराइटिस के लक्षणों को भी कम करता है। बादाम में कैल्शियम और मैग्नीशियम की भरपूर मात्रा पायी जाती है। यह ज्वॉइंट्स के इंफ्लेमेशन को मजबूत करने के साथ ज्वॉइंट के दर्द में राहत देता है। भुने हुए चने में विटामिन-के पाया जाता है। यह शरीर को कैल्शियम प्रदान करने के साथ जोड़ों के दर्द में भी आराम देता है।

सूखे हुए खजूर में विटामिन सी और विटामिन डी की भरपूर मात्रा पायी जाती है। इसके सेवन से कोलेजन प्रोजक्शन बूस्ट होता है और ज्वॉइंट में लचीलापन आता है।अजवाइन में विटामिन-के की प्रचुर मात्रा पायी जाती है। यह मांसपेशियों को आराम पहुंचाता है और जोड़ों का दर्द और सूजन खत्म करता है।दालचीनी में सिनेमिक एसिड पाया जाता है। इसके सेवन से जोड़ों के दर्द और इंफ्लेमेशन से राहत मिलती है।मिश्री डाइजेस्टिव जूस को रिलीज करने में सहायक होती है। इससे गैस की समस्या नहीं होती और पाचन में सुधार होता है। सौंठ में एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रॉपर्टीज पाया जाता है, यह ज्वाइंट में होने वाली ऐंठन को कम करती है।

बच्चों में डेंगू के लक्षणों को न करें अनदेखा, हेल्थ एक्सपर्ट्स से जानें बचाव के टिप्स

बारिश के मौसम में वेक्टर जनित बीमारियां की संभावना अधिक बढ़ जाती है। बारिश के मौसम में डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी बीमारियां तेजी से फैलती हैं। बच्चों में इन बीमारियों का खतरा सबसे ज्यादा रहता है। बता दें कि डेंगू का बुखार एजिप्टी एडीज नामक मच्छर के काटने से होता है। हालांकि बच्चे में डेंगू के लक्षण पेरेंट्स जल्दी पहचान नहीं पाते हैं। इस संक्रमण में सबसे पहले बुखार आता है। फिर धीरे-धीरे परेशानियां बढ़ने लगती है। डेंगू संक्रमण के लक्षण 3-4 दिन बाद गंभीर होने लगते हैं। बच्चों में डेंगू के लक्षणों पर ध्यान न देना सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकता है। कुछ गलतियां होने पर यह जानलेवा भी हो सकता है। हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहद कमजोर होती है। जिसकी वजह से उनका संक्रमण की चपेट में आने का खतरा अधिर रहता है। ऐसे में अगर बच्चों में डेंगू के लक्षणों की पहचान शुरूआती दिनों में करने और समय पर सही इलाज मिलने पर यह संक्रमण जानलेवा नहीं होता है। लेकिन ज्यादातर पेरेंट्स सही समय पर बच्चों

में डेंगू के लक्षणों को पहचान नहीं पाते हैं। शुरूआत में ही देखभाल करने से इसका खतरा काफी हद तक कम हो जाता है। इस बीमारी में मरीज की प्लेटलेट्स तेजी से कम होने लगती हैं। आमतौर पर डेंगू के बुखार में फ्लू जैसे लक्षण नजर आते हैं। डेंगू संक्रमण होने पर मांसपेशियों और शरीर में दर्द होता है। वहीं बच्चे इस परेशानी को सही से व्यक्त नहीं कर पाते हैं और पेरेंट्स इन्हें सामान्य फ्लू समझ लेते हैं। ऐसी करना बच्चे की सेहत के लिए नुकसानदेह हो सकता है। इसलिए डेंगू के इन लक्षणों के दिखते ही फौरन जांच करवानी चाहिए।

तेजी से सांस लेना

आमतौर पर डेंगू का बुखार बच्चों में तीन स्टेज में होता है। पहले स्टेज में मरीज को हल्के बुखार के साथ थकान की समस्या होती है। पहले चरण में 2-7 दिन के लिए बुखार रहता है। इस चरण में बच्चे को थकान, कमजोरी, मांसपेशियों में दर्द और बुखार की समस्या होती है। वहीं दूसरे चरण में बच्चे को मतली के साथ उल्टी और प्लेटलेट्स काउंट में कमी आने लगती है। तीसरे चरण में पहुंचने पर डेंगू से संक्रमित मरीज को ब्लीडिंग हो सकती है। बच्चों को डेंगू की चपेट में आने से बचाने के लिए अभिभावकों को कुछ सावधानियों का ध्यान रखना होता है। इसके लिए ध्यान रखें कि बच्चों को मच्छरों के काटने से बचाने का प्रयास करें। वहीं संक्रमण के लक्षणों को पहचानकर समय से इलाज लेने से इसका खतरा कई गुना तक कम किया जा सकता है। घर से बाहर निकलने के दौरान बच्चे को फुल आस्तीन के कपड़े पहनाएं। इसके अलावा आसपास की जगहों पर साफ-सफाई बनाए रहें और पानी जमा न होने दें। सही समय पर लक्षणों को पहचानकर इलाज देना सबसे बड़ा बचाव है।

28 की हुई सारा

सारा अली खान ने हाल ही में अपना 28वां जन्मदिन मना मनाया। इस खास मौके को सारा ने अपनी फैमिली और दोस्तों के साथ सेलिब्रेट किया है। एक्ट्रेस ने सेलिब्रेशन का वीडियो अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है, जिसमें वह अपनी मां और भाई के साथ केक काटती हुई नजर आई। वीडियो में सारा मां अमृता सिंह और भाई इब्राहिम के साथ नजर आ रही हैं। तीनों साथ में केक काटते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस दौरान कैजुअल लुक में सारा काफी खूबसूरत लग रही हैं सारा अली खान को करीना कपूर ने भी सोशल मीडिया पर जन्मदिन की शुभकामनाएं दी हैं। करीना ने सारा के बचपन की दो तस्वीरों का कोलाज बनाकर इंस्टाग्राम स्टोरी पर शेयर किया है। करीना ने फोटो शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, जन्मदिन मुबारक हो ब्यूटी-फुल,आपका साल शानदार रहे। एक फोटो में सारा पिता सैफ अली खान के साथ नजर आ रही हैं, वहीं दूसरी में सारा करीना और सैफ के छोटे बेटे जहांगीर अली खान के साथ दिखाई दीं।

लगातार मल्टीस्टारर फिल्मों के ऑफर आ रहेः नोरा

एक्टर और डांसर नोरा फतेही ने हाल ही में खुद के टाइपकास्ट होने पर बात की। बिना किसी का नाम लिए नोरा ने फिल्म मेकर्स पर आरोप लगाया कि उन्हें फिल्मों में लीड रोल नहीं दिए जाते हैं। नोरा ने कहा कि मेकर्स उन्हें बार-बार चार लड़कियों के लीड रोल वाली फिल्में ऑफर कर रहे हैं। एक्ट्रेस ने कहा कि उन्हें नहीं लगता है कि डासं नंबर्स करने की वजह से फिल्ममेकर्स उन्हें लीड रोल में नहीं लाना चाहते हैं। क्योंकि इंडस्ट्री की कई एक्ट्रेसेस ऐसी हैं, जो अच्छा डांस भी करती हैं। न्यूज18 को दिए इंटरव्यू में नोरा ने फिल्म मेकर्स पर उन्हें टाइपकास्ट करने का आरोप लगाया। नोरा ने 2020 में स्ट्रीट डांसर 3डी से अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी, इसके बावजूद उनकी पहचान बतौर एक्ट्रेस न होकर एक फेमस डांसर के तौर पर है। किसी का नाम लिए बिना नोरा ने कहा कि वो लीड रोल पाने में सक्षम नहीं हैं क्योंकि फिल्म मेकर्स उन्हें ऐसे किरदारों में कास्ट नहीं करना चाहते हैं। वो बारी-बारी से मल्टीस्टारर फिल्मों में ही काम कर रही हैं। उन्हें लगातार ऐसी ही फिल्मों के ऑफर आ रहे हैं। नोरा ने कहा- मुझे नहीं लगता कि मेकर्स मुझे इसलिए नहीं कास्ट नहीं करना चाहते, क्योंकि मैं डांस करती हूं। बॉलीवुड में ऐसी कई खूबसूरत लीडिंग एक्ट्रेस रही हैं, जो अच्छी डांसर भी हैं।

बिग एक्शन फिल्म में सुपर एजेंट के रोल में दिखेंगी

आलिया

आलिया भट्ट वायआरएफ स्पाई यूनिवर्स की अपकमिंग एक्शन थ्रिलर फिल्म के लिए मिक्स्ड मार्शल आर्टस की ट्रेनिंग लेंगी। इसके अलावा आलिया तीन महीनों तक इंटेंस वर्कआउट ट्रेनिंग भी करेंगी। दरअसल, आलिया ड्डत्रन्न स्पाई यूनिवर्स से जुड़ने वाली पहली फीमेल एक्टर हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक आलिया यूनिवर्स की आठवीं फिल्म फ्रेंचाइजी में नजर आएंगी। आलिया फिल्म में सुपर एजेंट के किरदार में दिखेंगी। वायआरएफ की फीमेल लीड वाली ये पहली फिल्म 2024 में रिलीज होगी और साल की शुरुआत में फिल्म की शूटिंग शुरू होने का अनुमान है। इस फिल्म में आलिया एक्ट्रेस शरवरी वाघ के साथ दिखेंगी। अब तक प्रोड्यूसर आदित्य चोपड़ा की ड्डत्रन्न स्पाई फिल्मों में सुपरस्टार के तौर पर सिर्फ मेल एक्टर्स को देखा गया। स्पाई यूनिवर्स की शुरुआत 2012 में फिल्म 'एक था टाइगर' से हुई थी।शाहरुख खान की फिल्म पठान और ऋतिक रोशन की फिल्म वॉर भी ड्डत्रन्न यूनिवर्स का हिस्सा है। इस यूनिवर्स में बनने वाली सभी फिल्में जासूसी बैकग्राउंड पर बेस्ड हैं। इससे पहले भी आलिया 2018 में आई फिल्म राजी में सीक्रेट एजेंट का रोल प्ले किया था। इस बार भी आलिया एजेंट के रोल में नजर आ सकती हैं। पिंकविला की रिपोर्ट के मुताबिक आदित्य चोपड़ा और उनकी टीम ने इस फीमेल लीड फिल्म के लिए काफी प्लानिंग की है। ड्डत्रन्न यूनिवर्स में आलिया जिस रोल में दिखेंगी, उस तरीके से आलिया को कभी किसी ने नहीं देखा होगा। ये बिग एक्शन फिल्म होगी।

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

·90.8 FM·

हरीश पाठक

कथाकार, लेखक

गूँज विशेष शख्सियत में इस बार हम अपने पाठकों को प्रख्यात कथाकार और वरिष्ठ पत्रकार हरीश पाठक जी से रूबरू करा रहे हैं। गूँज को दिए साक्षात्कार में उन्होंने अपनी जिंदगी के बारे में हमसे बातचीत की। पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

सर आप प्रख्यात लेखक हैं तो आपको लेखन में रुचि कैसे आई ?

ये मेरे बचपन का मामला है बिहार सेकेंडरी स्कूल में कक्षा छह का छात्र था और मेरे हिंदी के जो प्राचार्य थे डीएवीआर सेकेंडरी स्कूल के देश के बहुत बड़े शिक्षाविद है भारत भूषण त्यागी और प्रार्थना के बाद उनके भाषण रोज रहते थे तो बड़े गौर से उनको सुनता था जब मैं मेरी जो हिंदी की कॉपी थी तो उसमें पीछे की तरफ लिखा हुआ था कथाकार कहानीकार हरीश पाठक कॉपी के पीछे लिखा था तो अचानक वह कॉपी गिरी और वह पन्ना निकल आया तो उन्होंने देखा। वह मेरे पिता के मित्र थे और वही हमारा स्कूल था तो उन्होने कहा जिंदगी में तुम क्या करना चाहते हो तो मैंने कहा लेखक बनना चाहता हूं तो वह चिल्ला कर बोले लेखक बनोगे तो मैं डर गया के लेखक बनना शायद कोई बहुत बड़ी चीज है मैंने कहा जी तो बोलते हैं अच्छा उनकी जो भाव व्यंगना थी बहुत आश्चर्य में थे उन्होंने कहा हरीश तो लेखक बनना चाहता है। लेकिन मेरे अंदर शुरू से ही शब्दों के प्रति मोहब्बत थी लेखक बनना चाहता था। मेरे पिताजी चाहते थे कि मैं डॉक्टर या इंजीनियर बन जाऊं इनमें से कुछ ना बनो तो वकील बन जाऊं लेकिन मेरी यह स्थिति थी कि किसी और चीज में रुचि ही नहीं रख सकता था और उसमें जब मेरी कहानी छपने लगी तो देश में काम करने का प्रकाश बाजपेई ग्वालियर रहते थे मेरे स्कूटर पर घूमते थे तो मेरे साथ प्रताड़ना का परेशानियां शुरू में और मैं जिन शब्दों से मोहब्बत करता था मेरे पिता उन शब्दों से नफरत करते थे उनका सीधा-सीधा यह कहना था मुझे घर में टेंशन पैदा नहीं करनी मैं जिस जगह रहता था वहां रोटी पानी आसानी से नहीं मिलती थी पानी भर कर लाना पड़ता था और बड़े जैसे इलाके में तो क्या कहने और मैं कहानी सुनने चला जाता था तो मेरी पिटाई हुई कहानियों में कठिनाई शुरू हुई मेरी कहानी में रिफ्लेक्ट होगा और शुरू की कहानी कुछ नहीं सोचता था मैं लेकिन के अलावा पत्रकारिता करूंगा और मेरी जो जिंदगी का सफल रहा वह बुक में रहा जैसे किताबों में लिखा रहता है कहानी करूंगा बच्चे विदेश में पड़ेंगे वर्किंग वुमन से शादी करूंगा किताबें छापेंगे दैनिक भास्कर में संपादक बनेगा रिटायरमेंट के बाद में कोई नौकरी नहीं करूंगा मेरी जिंदगी में दो लोगों का बहुत बड़ा योगदान रहा एक कमलेश्वर दूसरा डॉ धर्मवीर भारती मैं आज आपके सामने नहीं बैठा होता।

आपके जीवन में प्रेरणा स्त्रोत कौन हैं?

मेरी जिंदगी अगर कमलेश्वर नही आते तो कुछ भी नहीं होता कमलेश्वर मेरे गुरु हैं कमलेश्वर ने मेरी जिंदगी में सब कुछ बदल दिया तीन कहानियां मैं साहित्य में लिखी कमलेश्वर का बहुत बड़ा नाम है हिंदी साहित्य में, दूरदर्शन में महानिदेशक रहे आंधी और मौसम जैसी कहानियां लिखी है। फनी परिक मा जैसा कार्यक्रम देते थे तो मैंने तीन कहानियां जो लिखी हैं।

अभिनेता राजबब्बर के ऊपर भी आपने किताबें लिखी है तो उसके बारे में आप कुछ बताएं हमें?

राज बब्बर मेरे 32 साल पुराने मित्र हैं मेरा मां और मेरा मानना है कि राज बब्बर मध्यवर्गीय मध्यवर्गी के प्रतीक है मिडिल क्लास फैमिली के थे लेकिन उन्हें सपने देखे संघर्ष किया आशा निराशा हताशा तो वह पर्दे पर भी जीते हैं और राजनीति में भी 20 साल तक लोकसभा के सदस्य रहे तो उनके जन्मदिन पर मैंने एक पोस्ट डाली थी फेसबुक पर प्रकाश भाऊ का मेरे पास फोन आया कि आपने अच्छी पोस्ट डाली फेसबुक पर तो आपका बहुत कुछ चलता रहता है लगता है आपके बहुत खास संबंध है तो मैंने कहा मेरे 32 साल पुराने मित्र हैं तो उनके ऊपर आप किताब लिखिए उनके ऊपर एक भी किताब नहीं है अगर आप लिख देंगे तो मैंने सोचा एक दिन अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों से राज बब्बर के ऊपर कुछ लिखवाए और वह किताब में एडिट करूंगा संपादक के तौर पर तो राज बब्बर को मैंने एक किताब बनाई और उनको मैसेज किया लेकिन मेरा तक का जवाब और उनका भी तत्काल जवाब आ जाता है गर्मी में मैंने दो बार उसे पर कवर स्टोरी की थी महाभारत में उन्होंने जब भूमिका निभाई तब की थी जब समाजवादी पार्टी नेता थे।

ग्वालियर वासियों को क्या संदेश देना चाहते है?

में जाते जाते ग्वालियर वासियों को बस यही संदेश देना चाहता हूं की अपने लिए आप जो भी देखें उसे पूरा करें और उन तक पहुंचने का रास्ता है उड़ान है वक्त कष्टप्रद है और न ही हम पानी से डरे ना ही धूप से ना किसी प्रताड़ना से और ना ही कभी हमारा उत्साह कमजोर है क्योंकि यदि हमने कुछ सोचा है उसको पूरा करे।

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

OPEN MIC

90.8 FM

मुकुट बिहारी सरोज सम्मान प्राप्त युवा कवियत्री कविता कर्मकार ने युवाओं संग बाँधा समां

कविताओं और गीतों ने ग्वालियर को किया मंत्रमुग्ध

● गूंज न्यूज नेटवर्क, ग्वालियर

इंद्रधनुष, एक कदम जल संरक्षण की ओर कार्यक्रम के तहत आज ओपन माइक कार्यक्रम का आयोजन सिटी सेंटर स्थित को - वर्किंग स्पेस ग्रैब स्पेस में आयोजित किया गया जिसमें लगभग 30 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया ओर अपनी कविताओं एवं गीत से वहां उपस्थित जन समूह का मन मोह लिया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मुकुट बिहारी सरोज सम्मान प्राप्त असम की जानी मानी युवा कवियत्री सुश्री कविता कर्माकर रही। विशेष अतिथि के तौर पर शहर की ख्यातिप्राप्त कवियत्री सुश्री करुणा सक्सेना एवं नगर निगम उप आयुक्त श्री शिशिर श्रीवास्तव जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजकों की ओर से स्तुति सिंह ने सभी अतिथियों का पुष्पहार द्वारा स्वागत किया। कार्यक्रम के सफल संचालन की जिम्मेदारी नीलम सिंह ने ली। सभी प्रतिभागियों ने स्वरचित सौंदर्य रस, वीर रस, करुणा रस आदि से औत प्रोत कविताओं का पाठन किया, एक तरफ

मुहब्बत और प्रेम में सराबोर रचनाओं से श्रोताओं का दिल जीता तो वहीँ दूसरी और उन्होंने इस समय देश में हो रही घटनाओ पर कटाक्ष भी किया। कुछ युवा प्रतिभागियों ने अपने गीतों से सभी का गुनगुनाने पर मजबूर किया। युवाओं के जोश को देखते हुए अतिथि भी अपने आपको नहीं रोक पाए ओर अपनी बेहतरीन कविताओं को श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में सुश्री करुणा जी ने कहा कि आज युवा सार्थक कवितायेँ रच रहा है, जिनमे कोई सामाजिक सन्देश या साहित्य की खुशबू महकती है। ये वो पीढ़ी है जो साहित्य के पथ पर चलते हुए समाज सुधारक का कार्य कर रही है। समारोह की मुख्य अतिथि सुश्री कर्माकर जी ने कहा कि लगता ही नहीं कि ये अनुभवहीन कवि या लेखक हैं , इनके विचार ओर जोश किसी भी विषय पर एक स्थापित लेखक से कमतर नहीं हैं। ये वो पीढ़ी है जो अपने शब्दों से भारत का एक नया इतिहास रचेगी। कार्यक्रम के अंत में कृति सिंह जी ने उपस्थित अतिथियों के साथ मिलकर सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दे कर सम्मानित किया ओर श्री अछेन्द्र सिंह जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

90.8 FM GOONJ आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

·90.8 FM·

हम स्मार्ट होंगे तभी हमारा शहर स्मार्ट होगा: नीतू माथुर

ग्वालियर गूँज विशेष में इस बार हम अपने पाठकों को स्मार्ट सिटी सीईओ नीतू माथुर जी से रूबरू करा रहे हैं। गूँज को दिए साक्षात्कार में उन्होंने अपनी जिंदगी एवं ग्वालियर में किए जा रहे विकास कार्यों को लेकर हमसे बातचीत की। पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

सबसे पहले आप अपनी जर्नी के बारे में हमें बताइए?

मेरा जन्म छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में हुआ था। मेरी स्कूलिंग और कॉलेज रायपुर में ही हुई है। पोस्ट ग्रेजुएशन के बाद में सिविल सर्विसेज में आने का सोचा, 2004 से मेरी जॉइनिंग है और तब से मैं अभी तक कार्यरत हूँ। विभिन्न विभिन्न जिलों में मैं विभिन्न विभिन्न पद पर रही। मैं एडीएम रही हूं अशोक पुरी जिले में। सीईओ जिला पंचायत रही चार जिलों में। ज्वाइन कमिश्नर भी रही और उसके बाद अब मैं को स्मार्ट सिटी सीईओ के रूप में कार्य कर रही हूं।

स्मार्ट सिटी ग्वालियर में बहुत चेंज लेकर आया ,है तो आगे क्या चेंज देखने को मिलेंगे ग्वालियर राइट्स को?

ग्वालियर में स्मार्ट सिटी बहुत सारे प्रोजेक्ट किए हैं और हमने अभी कुछ 24 नए प्रोजेक्ट लिए हैं। एक थीम पार्क बे डेवलप्ड कर रहे हैं जिसमें चार थीम रहेगी और इसके बाद हम लोग स्वच्छता पर भी प्रोजेक्ट कर रहे हैं ऐसे ही मिला के कुल 24 प्रोजेक्ट है हमारे पास और यह सारे प्रोजेक्ट हम लोग जून तक कंप्लीट करेंगे। तो निश्चित रूप से ग्वालियर में और भी परिवर्तन दिखेगा।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि ग्वालियर एक टूरिस्ट प्लेस है तो आगे टूरिज्म में क्या अनोखा देखने को मिलेगा और इस पर क्या प्रोजेक्ट है?

स्मार्ट सिटी न सिर्फ एक डिपार्टमेंट की तरह काम करता है बल्कि कुछ डिपार्टमेंट से ऑर्डिनेशन का काम भी स्मार्ट सिटी का है। टूरिस्ट डिपार्टमेंट द्वारा ग्वालियर को स्वदेश दर्शन दो के लिए चुना गया है । इन सब का कोऑर्डिनेशन स्मार्ट सिटी के द्वारा ही हो रहा है। तो यह सिर्फ स्मार्ट सिटी के माध्यम से डेवलप नहीं हो रहा है, बल्कि टूरिज्म डेवलप्ड की कोऑर्डिनेशन के वजह से भी हो रहा है। तो हम टूरिस्ट को कैसे अट्रैक्ट कर सकते हैं इसके लिए कई सारे प्रोजेक्ट आने वाले हैं।

ग्वालियर के जो लोग हैं अक्सर वह रोड के बारे में बहुत कंप्लेंट करते हैं, तो इस पर आप क्या कहना चाहेंगे?

यह एक मिसअंडरस्टैंडिंग है कि, सीवर या रोड का काम है, या फिर बेसिक इंफ्रास्ट्रक्चर है , पेयजल है ,तो इन सब चीजों में अक्सर यह कहा जाता है कि स्मार्ट सिटी इन सारे चीजों पर वर्क नहीं कर रहा है। तो मैं आपको यह क्लियर करना चाहूंगी कि यह सारे काम नगर निगम के हैं, यह एक डिपार्टमेंट है जो यह सारी फैसिलिटी डेवलप करता है। और नगर निगम इन सारी चीजों को सुधारने के लिए बहुत कम भी कर रहा है। और हम दोनों अलग-अलग है यानी नगर निगम डिफरेंट है और स्मार्ट सिटी डिफरेंट है।

अगर नगर निगम अलग है और स्मार्ट सिटी अलग है, तो आखिर स्मार्ट सिटी का फंक्शन क्या है ?

पूरे देश में 100 सिटी है जिन्हें स्मार्ट बताया गया है जिसमें से एक हमारा ग्वालियर भी है। कुछ यूनिक करना , सिटी को स्मार्ट बनाना और कुछ ऐसा डेवलप्ड किया जाए ताकि यह सिटी का उदाहरण दिया जाए दूसरे सिटी को। स्मार्ट सिटी एक लाइट हाउस की तरह काम करता है। और सबसे जरूरी काम की शहर के लोगों को सुविधा भी दे।

स्मार्ट सिटी सोलर और वाटर हार्वेस्टिंग पर भी कम कर रहा है, तो उसके बारे में कुछ बताइए?

-स्मार्ट सिटी ने सोलर और वाटर हार्वेस्टिंग का प्रोजेक्ट लिया था। और मुझे यह बताते हुए काफी खुशी मिल रही है कि हमने उसे वाटर हार्वेस्टिंग के थ्रू 3-30 करोड़ लीटर पानी हमने कंजर्व किया । अभी हाल ही में एक कॉलेज के थ्रू डिमांड आई थी तो हम वहां पर भी वाटर हार्वेस्टिंग का काम कर रहे हैं। हम लोग प्राइवेट बिल्डिंग पर काम नहीं कर सकते हम लोग सिर्फ गवर्नमेंट के बिल्डिंग पर ही कम कर सकते हैं । तो अगर कोई वाटर हार्वेस्टिंग करना चाहता है तो , हम लोग निश्चित रूप से गाइड करेंगे।

ग्वालियर राइट्स को क्या मैसेज देना चाहेंगी?

- मैं ग्वालियर राइट्स को यही बताना चाहूंगी की ग्वालियर बहुत सुंदर शहर है और इस सुंदर बनाए रखिए और इस सुंदर नजरों से भी देखिए , क्योंकि यह अभी डेवलपमेंट की स्टेज पर है,चीज एकदम से नहीं आ जाती धीरे-धीरे परिवर्तन आएगा , तू मेरा यही संदेश है आप सब लोगों के लिए की हम स्मार्ट होंगे तभी हमारा शहर स्मार्ट होगा।

90.8 FM GOONJ आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

90.8 FM

नियमों का पालन करने से ही बेहतर होगी ट्रैफिक व्यवस्था

डॉ. ऋषिकेश मीणा

एडिशनल एसपी ग्वालियर

गूँज स्पेशल में इस बार हम अपने पाठकों को एडिशनल एसपी ग्वालियर डॉ. ऋषिकेश मीणा जी से रूबरू करा रहे हैं। गूँज को दिए साक्षात्कार में उन्होंने ग्वालियर पुलिस द्वारा ट्रैफिक में किए जा रहे सुधार एवं स्मार्ट पुलिसिंग के बारे में हमसे बातचीत की। श्री मीणा ने अपनी जिंदगी के कुछ विशेष पहलूओं को भी गूँज से साझा किया पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

आपकी इस जर्नी की शुरुआत कैसे हुई ?

मैं बहुत ही डीसेंट बैकग्राउंड से आता हूं मेरे माता पिता खेती करते हैं वह अभी भी गांव में रहते हैं। हम चार भाई हैं पिताजी ने सपने दिखाए डॉक्टरी में एक अच्छा भविष्य है तो राजस्थान के जयपुर सवाई मानसिंह मेडिकल से एमबीबीएस किया। ग्रेजुएशन के दौरान एहसास हुआ कि कुछ और अच्छा करना है मैंने पिताजी से एक-दो साल का समय मांगा कि मैं यूपीएससी की तैयारी करना चाहूंगा और एमबीबीएस की इंटर्नशिप के दौरान दिल्ली शिफ्ट हो गया। यूपीएससी से ही मेडिकल का जॉब निकला था और जॉब के साथ तैयारी कि मेरा पहले आईआरएस में सिलेक्शन हुआ और अभी आईपीएस में मैं पहली पीढ़ी हूं जो सरकारी नौकरी में है।

आप डॉक्टर भी रह रहे हैं अपने तिहाड़ में मेडिकल प्रैक्टिसनर भी अपनी सेवाएं दी क्या और कैसा अनुभव रहा?

बहुत ही अच्छा अनुभव रहा यूपीएससी से भर्ती निकली थी मेडिकल ऑफिसर की 15 जगह की चॉइस फीलिंग मिली थी मैंने वहां ऑप्शन भरे की जहां में 6 घंटे की डॉक्टरी के साथ-साथ अपनी पढ़ाई भी कर सकूं। तिहाड़ का नाम सुनकर ही सिरहन दौड़ने लगती है तिहाड़ मेरे ऑप्शन में नहीं था तिहाड़ी कॉम्प्लेक्स है। उसमें 9,10 जेल है सेंट्रलाइज हॉस्पिटल है 100 150 डॉक्टर जहां काम करते हैं। मेरी पोस्टिंग तिहाड़ में हुई तिहाड़ का जो काम करना रहा है वह बहुत चुनौतीपूर्ण है चार-पांच साल तक वहां काम किया दो-तीन हजार कैदी हैं एक अलग स्पेक्ट्रम है। इसे वही समझ सकता है जिसने वहां काम किया हो तिहाड़ में काम करते हुए मुझे पढ़ने का समय मिला और मैंने यूपीएससी क्रैक किया और अब आपके सामने हूं।

क्राइम एक ऐसा विषय है जिस पर सबकी अपनी-अपनी राय होती है समय के साथ बहुत कुछ बदला है लोगों का कहना है कि पहले अपराध नहीं होता था, अब ज्यादा होता है?

हम एक सभ्यता में हैं जी रहे हैं जो सभ्यता में अपराध और अपराधी समानांतर होते हैं पहले टेक्नोलॉजी नहीं थी तो अलग तरह से क्राइम होते आज टेक्नोलॉजी है आज से 20-25 साल पहले जो क्राइम था वह बॉडी चांग था आज साइबर फ्रॉड पर है।

Eveteasing बहुत बड़ा मुद्दा है कैसे महिलाएं अपने आप को सुरक्षित करें और उनसे बचे ?

यह बहुत ही जघन्य अपराध है आरोपी जानकर होता है। वह परिवार का होगा आस-पास का होगा दोस्त होगा. बाकी विश्वास में होते हैं मतलब कहीं ना कहीं वह उन्हें

90.8 FM GOONJ
आपकी अपनी आवाज़

EK MULAQAT

90.8 FM

जानते हैं। छेड़छाड़ को लेकर हमने 8-9 महीने पहले निर्भया मोबाइल भी चलाया था और हम हॉटस्पॉट को भी कवर कर रहे हैं जैसे कि पिकनिक कोचिंग सेंटर जहां पर ऐसी घटनाएं हो सकती हैं.महिला पुलिस लगातर पेट्रोलिंग करती है और बड़ा जो नोबेल विचार मेरे ग्वालियर आने से पहले भी था एफआईआर 7 मेरे सीएसपी रहते मैंने इसे और बढ़ाया और एसपी और एडीजी साहब के मार्गदर्शन में काम चल रहा है अगर परेशान करने वाला जाना पहचाना ही होता है तो कई बार बच्चे नहीं कह पाते घरवाले ही शांत कर देते हैं इसलिये हर बच्ची अपनी बात कह पाये, हमने पूरे शहर में बेटी की पेटी शिकायत पेटी लगाई है जिसे वह आसानी से बिना अपना नाम बतायें अपनी शिकायत डाल सकती है जो भी शिक़ायत अपराध के ख़िलाफ़ आती है हम उसका उपयोग करते हैं।

शहर में अपराध की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं, ऐसे में हमारा पुलिस प्रशासन क्या कर रहा है?

क्राइम एक पैटर्न में होता है एक ऐसा जादू आता है जिसमें 10 15 दिन में बहुत क्राइम हो जाता है या पुलिस भी परेशान रहती है मैं आपके रेडियो की माध्यम से ग्वालियरवासियों को बताना चाहता हूं कुछ अपराध ऐसे होते हैं जो रुके नहीं जा सकते। जिनमें हमको और समाज को सतर्क रहने की जरूरत होती है कौन सा अपराध ऐसे होते हैं जिनकी हम टाइम से रिपोर्ट नहीं करते हैं फिर भी हमारे पास जितनी शिकायतें आती हैं उनके प्रति हम पूरा एक्शन लेते हैं और खुलासा करते हैं हमारा नियन्त्रण है अपराध पर।

जनसुनवाई में कोई अपनी शिकायत लेकर आये तो कितने समय में उसकी शिकायत का निराकरण हो जाता है?

मंगलवार का दिन जनसुनवाई के लिए रखा गया। संपत्ति से जुड़े जो मामले होते है वह सिविल नेचर के होते हैं जिनमें पुलिस के पास पॉवर नहीं होती ज़मीन जायदाद के झगड़े होंगे पारिवारिक विवाद होंगे ऐसे मामलों को राजस्व विभाग ही समझ सकता है। पुलिस नहीं तलाक हुआ ये फैमिली कोर्ट में जाएंगे, पुलिस का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। बाल विकास अधिकारी के अंतर्गत भी कई सारे केस जाते हैं। हम कोशिश करते हैं कि जो भी बात हो वह सामने आए और ज्यादा समय ना लगे कई बार विभाग से आने में भी समय लग जाता है जो शिकायत किसी और पुलिस स्टेशन या अलग विभाग से होती है।

जो भी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं वो निराश भी होते है वो डिप्रेशन का शिकार हो जाते है ऐसे में उनसे आप क्या कहना चाहेंगे?

बच्चों के ऊपर उम्मीदों का बोझ बहुत ज्यादा होता है जैसा कि मैंने बताया कि मैं भी एक ग्रामीण परिवेश से आता हूं मां बाप आज भी खेती करते हैं और जब मैं एमबीबीएस कर सकता हूं , मैं यूपीएससी क्लियर कर सकता हूं तो आप क्यों नहीं मैंने भी जिंदगी में कई परेशानियाँ देखी लेकिन प्रयास और मेहनत करते रहने से ही सफ़लता मिलती है अगर आपने डिप्रेशन में चले गए तो अपने एक समस्या में समस्या और जोड़ ली। मैं यही कहता हूं अपनी रणनीति को उचित उपयोग के लिए फॉलो करो और एक लक्ष्य को निर्देशित कर निरंतर लगे रहो निरंतर मेहनत करो जिंदगी में कभी काश शब्द नहीं

होना चाहिए।

आप ग्वालियर की कमान संभाल रहे हैं और ऐसे में आप क्या बदलाव चाहते हैं क्या ग्वालियर में होना चाहिए?

ग्वालियर का अपना एक समृद्ध इतिहास रहा है।ज जो युवा है आज उसकी बहुत ऊर्जा है और संस्थान इनको आज भी बढ़ावा दे रहे हैं तो जो युवा सेना में जाना चाहता है नेवी में जाना चाहता है बस उन्हें एक लक्ष्य तय करने की जरूरत है जो हमारा युवा है क्राइम क्रिमिनल की दुनिया को छोड़िए और अपना पोटैशियम पोटेंशियल पहचानिए और उसमें लग जाइए जनरली मै कहना चहुँगा ग्वालियर की जनता के लिए खुद जिमेदार होकर नियमों का पालन करें बुद्धिजीवी भी कर रहे हैं और हमें भी करना होगा।

आपको ग्वालियर में बहुत ही सख्त अधिकारी के तौर पर जाना जाता है लेकिन आपका यह नरम रवैया भी क्या आप निजी जीवन में भी स्ट्रिक्ट पर्सन हैं ?

अगर अगर कोई मुझे प्यार से गले लगाएगा तो मैं आगे बढ़कर दो कदम प्यार से गले लगाऊंगा लेकिन अगर कोई मुझे आपराधिक दिमाग का लगाएगा तो मैं दो कदमों से एनर्जी से कानून का पाठ पढ़ाऊंगा और और हमें हर तरीके के लोगों से डील करना होता है इसलिए हमें सक्त भी होना होता है.

क्या बदलाव हम कर रहे हैं ट्रैफिक को लेकर? हॉटस्पॉट महाराजा बाड़ा इंदरगंज जहां पर ट्रैफिक होता ही है कई बार जाम जैसी स्थिति हो जाती है तो ऐसे में पुलिस क्या कदम उठा रही है ?

ट्रैफिक बहुत बड़ा जटिल मुद्दा है इसमें सभी विभाग मिलकर बैठेंगे तब उसका सॉल्यूशन निकलेगा क्योंकि सभी इसमें हितधारक हैं और जब सब मिलकर सारे विभाग मिलकर इस पर बात करेंगे तभी इसका कोई दीर्घकालिक समाधान निकलेगा अभी हमें नगर निगम स्मार्ट सिटी के साथ बैठकर काम किया है ट्रैफिक सेंस नहीं है हर किसी को जल्दी है लोगों को कई बार अपील की है का हमारा साथ और हमें साथ मिलकर बदलाव लाना है। नियमों का पालन करना जरूरी है समस्या बहुत ज्यादा बड़ी है इसका समाधान भी हम सबको मिलकर लेना होगा जनता को सबसे ज्यादा इसकी पहल करनी होगी।

EK MULAQAT

कविता कर्मकार

गूँज साहित्य विशेष में इस बार हम अपने पाठकों को देश की जानी मानी युवा असमिया ,हिंदी ,अंग्रेजी और बांग्ला भाषाओं में कविता लिखने वाली सुश्री कविता कर्मकार जी से रूबरू करा रहे हैं। गूँज को दिए साक्षात्कार में उन्होंने अपनी जिंदगी को लेकर हमसे बातचीत की। पेश है उनसे बातचीत के मुख्य अंश।

ग्वालियर में मुकुट बिहारी सरोज अवार्ड से नवाजा गया है सो हाउ वास योर एक्सपीरियंस?

मुकुट बिहारी सरोज स्मृति न्यास के तरफ से यह अवार्ड मेरे लिए बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है। और यह मेरे लिए बहुत ज्यादा भावुक रहा कि मैं बहुत ज्यादा भावुक इसलिए थी क्योंकि इससे पहले जिन-जिन व्यक्तियों को यह अवार्ड मिला जो सम्मान से नवाजा गया उनमें से है निदा फ़ाज़ली और फिर राजेश जोशी नरेश सक्सेना जी निर्मला पुतुल जी और कात्यानी जैसे बहुत सारे लोग यह सारे ही भारत के साहित्य के एक बहुत बड़े-बड़े नाम है और इस कड़ी में मेरा नाम शामिल होना मेरे लिए बहुत बड़ी बात है बहुत ही खुशी की बात है तो इसलिए मैं बहुत खुश हूं।

इस फील्ड में आपकी जर्नी केसे शुरू हुई?

सबसे पहले तो मेरा नाम दिया गया कविता ।जब कोई पूछता तो में बताती हूं तो हम जब भी बच्चों को कभी कभी पूछते है ना कि बेटा जी आप का नाम का अर्थ क्या है तो हमसे भी पूछ गया कि बेटा आपका नाम क्या है मैं हमेशा सोच में पड़ जाती थी मैं यह बताने में कंफ्यूज हो जाती थी कि अभी मैं कविताएं लिख रही हूं कविता का जो डेफिनेशन आज तक नहीं मिला 7

आपकी लिखी हुई स्टोरी को अवार्ड मिला है उसके बारे में आप उसके बारे में हमें कुछ बताएं?

असम का एक जाना माना अवार्ड 2014 में मुझे मिला था और वह मेरी पहली कहानी थी और मैंने ऐसे ही भेज दिया था पब्लिश होने के लिए मैगजीन में लेकिन उसी समय ऐसा हुआ था कि इस प्रतियोगिता के लिए भी प्रविष्टियां मांग रहे थे मैंने बोला कि क्या पता भेज देते हैं पब्लिश होगा कि नहीं होगा ठीक है मैं कविता के क्षेत्र से हूं लेकिन हो गया और बहुत ही ज्यादा खुशी की बात थी और जो उस कहानी का बैकग्राउंड है असम की बैंक शेयर पहनावा ट्रेडिशनल उसके कपड़े कैसे बनते हैं इसका उल्लेख उसे कहानी में मैंने किया था और उसमें जो एक में कैरेक्टर एक लेडी थी उसे लेडी के कहानी में बहुत सारे स्ट्रगलर आते हैं वह कैसे ओवर कम करती है सब फिर समाज के लिए ऐसे पहलू जो की हमेशा महिलाओं को ही डोमिनेट करती है वहां दोस्त किसी का भी हो परंतु दोष महिला पर ही किया जाता है इस तरह से कई सारे पहलू को मैंने जोड़कर उलझनों के उपर लिखा है।

विज़न ज़ीरो
EDUCATION AND TRAINING ARE CRUCIAL IN INSTILLING APPROPRIATE BEHAVIORS AND ATTITUDES IN ROAD USERS
STOP
CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES WILL MAKE A DIFFERENCE
90% of ALL ACCIDENTS ARE LINKED TO HUMAN ERROR
THE BEHAVIORS OF ROAD USERS IS THE ARE WITH BY FAR THE BIGGEST POTENTIAL FOR IMPROVING ROAD SAFETY
IN 30% OF FATAL ACCIDENTS SPEEDING
DISTRACTION CAUSES 10-30% OF ROAD DEATHS
25% OF ALL ROAD FATALITIES IN EUROPE ARE ALCOHOL- RELATED
ABOUT 65% OF FATAL ACCIDENTS ARE CAUSED BY VIOLATIONS OF TRAFFIC RULES

ON AIR
90.8 FM
GOONJ
आपकी अपनी आवाज़
First Frequency Radio Station of Gwalior
Stories | Talkshows | Knowledge
Goonj90.8
www.goonjgwl.com